खोये हुओं
के लिये
प्रभावी रीति से प्रार्थना करना

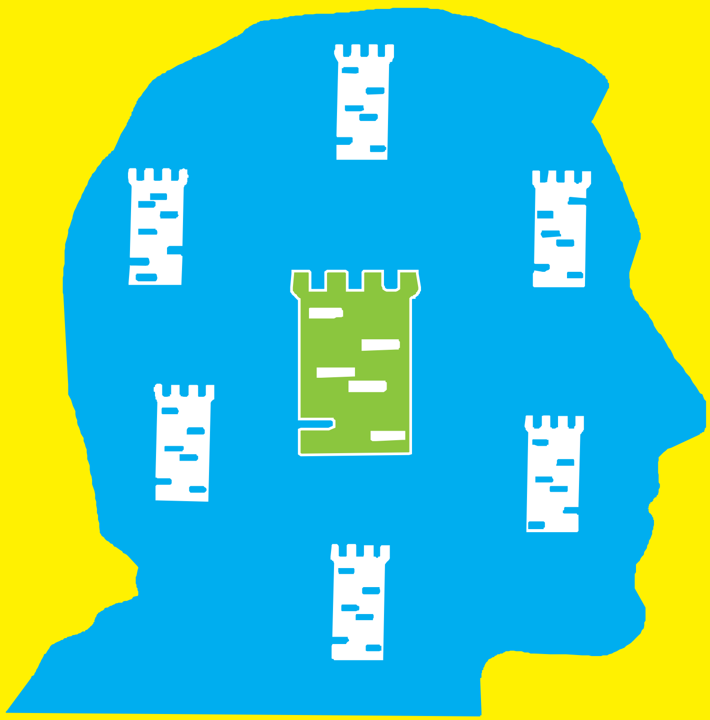

"उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है . . ." (2 कुरिन्थियों 4:4)

PRAYING EFFECTIVELY FOR THE LOST
(Hindi)

लेखक:
ली. ई. थॉमस

खोये हुओं
के लिये
प्रभावी रीति से प्रार्थना करना

लेखक
ली. ई. थॉमस

PRAYING EFFECTIVELY FOR THE LOST
by
Lee E. Thomas
(Hindi)

शास्त्र-वचन पवित्र बाइबल ओ. व्ही. (रि-एडिटेड) से लिये गये हैं।

Copyright © All India Decade of Advance, New Delhi, India
Published by : All India Decade of Advance, New Delhi, India

Copies are available from:
Rev. Stephen Rawate, Executive Director, AIDA
Post Box No. 7530, Vasant Kunj, New Delhi - 110 070

विषय-वस्तु

1. अनिवार्यता को समझना 1
2. बाइबलीय आधार 4
3. व्यक्तिगत घटक 8
4. सुस्पष्ट निवेदन 18
5. आत्मिक युद्ध 25
6. व्यक्तिगत गवाहियाँ 38
7. प्रतिज्ञा करना 45

AIDA - 2006
THE YEAR OF PRAYER

एइडा के अंतिम चार वर्षों के लिये ठहराये गये मूल-विषयों के अनुसार वर्ष 2006 "प्रार्थना का वर्ष" है। इस वर्ष की एइडा सेवकाइयों का केन्द्र कलीसिया को सामूहिक तथा व्यक्तिगत स्तर पर प्रार्थना की पुनःजागृति के लिये गतिमान करना होगा ताकि खोये हुओं के उद्धार के लिये, उद्धार पाये हुओं को शिष्यत्व में बढ़ाने के लिये और कलीसियाओं में एकता के लिये प्रार्थना करें।

वर्ष 2006 का एइडा साहित्य, विशेषकर प्रपोजल्स् फॉर प्रोग्रेस, का उद्देश्य इस वर्ष का उपयोग प्रत्येक कलीसिया को प्रार्थना करने वाली कलीसिया होने हेतु पुनःजागृत करने के लिये अनेक व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है।

इस पुस्तक का चुनाव विशेषकर इसलिये किया गया है कि कलीसियाओं को खोये हुओं के लिये प्रभावी रीति से प्रार्थना करने हेतु प्रोत्साहित किया जाये।

इस पुस्तक के लेखक,
ली॰ ई॰ थॉमस, के प्रति
अत्यंत आभार प्रगट किया जाता है,
जिन्होंने एइडा सेवकाइयों के अन्तर्गत
इस पुस्तका वितरण करने हेतु
इसे छपवाने की अनुमति दी है।

अध्याय १

अनिवार्यता को समझना

खोये हुये लोग तब तक उद्धार **नहीं पाएँगे** और सचमुच **नहीं पा सकते** जब तक कोई उनके लिये प्रार्थना न करे। यह आघात पहुँचाने वाला ऐसा कथन है जो तब तक अविश्वसनीय लगता है जब तक कि हम खोये हुओं का बाइबिल आधारित चित्रांकन नहीं देख लेते हैं, जैसे: वे शैतान की संतान हैं (यूहन्ना 8:44), वे शैतान के अधिकार के अधीन हैं (प्रेरितों 26:18), बलवन्त मनुष्य का घर (मरकुस 3:27), युद्धबन्दी (यशायाह 14:17) और सुसमाचार के प्रति अंधे हैं (2 कुरिन्थियों 4:3-4)।

यह सब भयभीत करने वाले कारण हैं जो हमें बताते हैं कि हमें क्यों खोये हुओं के लिये प्रार्थना करना अवश्य है ताकि उनके लिए उद्धार की कोई आशा हो। परन्तु आइये थोड़ी देर के लिये हम मात्र आत्मिक अंधेपन पर ध्यान केन्द्रित करें। 2 कुरिन्थियों 4:3-4 में लिखा है, "यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है तो यह नष्ट होने वालों के लिये पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है **ताकि** मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।" ये पद स्पष्ट रीति से सिखाते हैं कि शैतान ने खोये हुओं की बुद्धि को **विशेषकर** सुसमाचार को समझने से रोकने के लिये अंधा कर दिया है।

लुईस स्पेरी शेफर कहते हैं, "कुरिन्थियों 4:3-4 में उल्लेखित बुद्धि का अंधापन या परदा पड़ा होना उद्धार के उपाय को समझने में **विश्वव्यापक अक्षमता** उत्पन्न करता है। यह परमेश्वर के प्रमुख शत्रु द्वारा, परमेश्वर के उद्धार के प्रयोजन में बाधा पहुँचाने के प्रयासों के अन्तर्गत, नया जन्म न पाये हुये मनुष्य के ऊपर थोपा गया है। यह **बुद्धि की वह दशा** है जिसके विरुद्ध मनुष्य की **कोई सामर्थ्य** काम नहीं कर सकती" (शेफर 57)।

अब तक के सभी महान प्रचारकों में चार्ल्स एच॰ स्पर्जन का नाम सबसे प्रमुख है। वे अपने जीवन-परिवर्तन के विषय में क्या कहते हैं सुनिये: "मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे धर्मपरायणता की शिक्षा दी गई थी, प्रार्थनापूर्ण हाथों द्वारा मुझे मेरे पालने में रखा गया था और यीशु के गीतों के साथ सुलाया गया था। मैंने **लगातार** सुसमाचार सुना था। तौभी जब प्रभु का वचन मेरे पास सामर्थ्य के साथ आया तो वह ऐसा नया था जैसे कि मैं मध्य अफ्रीका के सुसमाचार-विहीन जनजातियों के मध्य पला-बढ़ा था और उद्धारकर्त्ता की शिराओं से निकले रक्त से भरे शुद्ध करने वाले कुंड का सुसमाचार कभी नहीं सुना था।

जब मैंने सुसमाचार को पहली बार स्वीकार किया और मेरी आत्मा उद्धार पा गई, मैंने सोचा कि मैंने वास्तव में इसके पहले इसे कभी नहीं सुना था। मैं सोचने लगा कि मैंने जिन प्रचारकों को सुना था उन्होंने सच्चाई में उसका प्रचार नहीं किया था। परन्तु पलटकर पीछे देखने पर मेरा झुकाव इस ओर होता है कि विश्वास करूँ कि मैंने पहले भी सुसमाचार को पूर्णत: प्रचार किये जाते सैकड़ों बार सुना था। भिन्नता यह थी: तब मैंने उसे ऐसे सुना मानो सुना ही नहीं। जब मैंने उसे सुना, हो सकता है कि सन्देश उसके पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट नहीं रहा होगा परन्तु मेरे कानों को खोलने और सन्देश को मेरे हृदय तक पहुँचाने के लिये पवित्र आत्मा की सामर्थ्य उपस्थित थी।

तब मैंने सोचा कि मैंने इसके पहले सत्य का प्रचार होते कभी सुना ही नहीं था। **अब** मुझे निश्चय है कि मेरी आँखों पर ज्योति अनेक बार पड़ी थी, परन्तु मैं अंधा था; इसलिए मैंने सोचा था कि वहाँ तक ज्योति कभी आई ही नहीं थी। ज्योति पूरे समय चमक रही थी, परन्तु उसे स्वीकार करने की सामर्थ्य वहाँ नहीं थी। आत्मा की आँखे ईश्वरीय किरणों के प्रति संवेदनशील नहीं थीं" (स्पर्जन 26-28)।

स्पर्जन की गवाही इस बात का दमदार उदाहरण है कि सुसमाचार उस बुद्धि के लिए जो उसके प्रति अंधी की गई है कितना अप्रभावी है। उन लोगों के साथ जिनके लिए किसी ने कभी प्रार्थना नहीं की है सुसमाचार बाँटना ऐसा है मानो आप किसी अंधे को अपने साथ सुन्दर सूर्यास्त देखने के लिए उत्साहित कर रहे हैं। यह तो निराशाजनक बात हुई, क्योंकि वह अंधा है। वह तो देख ही नहीं सकता!

और जब तक पवित्र आत्मा शैतानी अंधत्व को हटाकर उसकी बुद्धि और हृदय को सुसमाचार के लिए नहीं खोलता, वह उद्धार नहीं पा सकता क्योंकि परमेश्वर की बातें उसके लिये "मूर्खता है" (1 कुरिन्थियों 2:14)। यूनानी भाषा में मूर्खता के लिए "मोरिया" शब्द है जिससे अँग्रेज़ी शब्द मोरोन आया है। वेबस्टर मोरोन को इस प्रकार परिभाषित करते हैं: "मानसिक अभाव का सर्वोच्च स्तर, जड़बुद्धि और मूर्ख से भी बदतर"। इसलिए एक खोया हुआ व्यक्ति सुसमाचार को जड़बुद्धि और मूर्ख की नाईं देखता है, परन्तु सुसमाचार के प्रति ऐसा नकारात्मक व्यवहार उत्पन्न करने का काम वह "बलवन्त" करता है जो उसके जीवन में है।

जो व्यक्ति ऐसी परिस्थिति में है (जिसमें खोया हुआ ऐसा प्रत्येक व्यक्ति सम्मिलित है जिसके लिये कोई प्रार्थना नहीं कर रहा है) उसे सुसमाचार सुनाने से लाभ कम पर हानि ही अधिक हो सकती है। जेस्सी पेन-लुईस कहते हैं, "जब तक हम सुसमाचार के प्रति अंधापन और विचारों के सारे अंधकार के पीछे 'शस्त्रों से पूर्णत: सुसज्जित' बलवन्त को पहचान नहीं लेंगे, तब तक हम लोगों को अंध कार की सामर्थ्य से बाहर निकालकर परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में लाने की दिशा में सफल नहीं हो सकेंगे। और जब तक हम यह नहीं जान लेंगे कि प्रभु की चेतावनी का पालन कैसे करें और **सर्वप्रथम** बलवन्त को कैसे बाँध लें तब तक

उसके घर को लूटने के हमारे प्रयास उसे मात्र **क्रोधित करेंगे** और उसे इस योग्य बनायेंगे कि वह अपने शस्त्रों को संवार ले और बड़े आराम के साथ अपने महल की रखवाली करे" (पेन-लुईस 42-43)।

एक बार जब हम जिनका उद्धार होना है उन आत्माओं के लिये प्रार्थना करने के महत्व को समझ लेते हैं, तब अवश्य है कि हम उसे **कैसे** करें यह सीख लें। 'फुलनेस' पत्रिका के जनवरी 1979 के अंक में मैनली बिस्ली ने "खोये हुओं के लिये प्रार्थना करना" इस शीर्षक का एक लेख लिखा है। उनका आरम्भिक कथन यह है: "खोये हुओं के लिये प्रार्थना करना यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसके विषय में कहा तो बहुत गया है परन्तु थोड़ा ही जाना या समझा गया है।" यह कुछ ऐसा है जैसा किसी बन्द तिजोरी को खोलने के लिये किन सही अंकों का संयोजन चाहिये यह जाने बिना ही उसे खोलने के प्रयास करना - भीतर चाहे कितना ही मूल्यवान धन क्यों न हो, अंतत: हम निराश होकर छोड़ देते हैं।

परन्तु वे अविनाशी आत्माएँ जिनके लिये मसीह ने अपने प्राण दिए इतनी अधि क मूल्यवान है कि हम उन्हें छोड़ नहीं सकते हैं। इसलिये अवश्य है कि हम उनके लिये प्रभावी रीति से प्रार्थना **कैसे** करें यह सीख लें। वास्तव में, यह **आपकी ही** प्रार्थना हो सकती है जो किसी को नरक से बचा कर रखती है। आत्मिक जागृति के चिर-परिचित प्रचारक चार्ल्स जी॰ फिन्नी ने कहा, "एक पश्चातापहीन मित्र के मामले में हो सकता है कि उसे नरक से बचाये जाने की शर्त आपके द्वारा उसके लिए की गई प्रार्थना की सरगर्मी और आग्रह ही हो" (फिन्नी 54)।

यीशु ने **वही** किया जो उसने अपने पिता को करते हुये देखा (यूहन्ना 5:19)। इसी प्रकार, हमें भी वही करना चाहिये जो हम अपने प्रभु को करते हुये देखते हैं, और वह क्या कर रहा है - "वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रानियों 7:25)। हम कुछ मसीहियों को मध्यस्थ का नाम देकर बहुत बड़ी गलती करते हैं। यह ऐसी घोषणा करने का प्रयास है कि मानो हम जो बाकी लोग हैं इस जिम्मेवारी से बच गये हैं - ऐसा नहीं है!!! हम सब को वही करना है जो हम अपने प्रभु को करते देखते हैं - दूसरों के लिये प्रार्थना करना।

इसलिये, आइये हम खोये हुओं के लिये प्रभावी रीति से प्रार्थना करना सीखें और यह प्रमुख कार्य करने में अपने प्रभु के साथ जुड़ जायें।

अध्याय २

बाइबलीय आधार

प्रभावी प्रार्थना के सर्वाधिक प्रभावशाली उपायों में से एक यह होता है कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलना क्यों अवश्य है इसके परमेश्वर के सामने ठोस कारण प्रस्तुत किये जायें। वह यशायाह 41:21 में हमें ऐसा करने का आदेश भी देता है: "यहोवा कहता है, "अपना मुकद्दमा लड़ो," . . . "अपने **प्रमाण** दो"।"

सर्वाधिक ठोस कारण हमेशा बाइबिल पर आधारित होते हैं; और खोये हुओं की प्रार्थना के संबंध में ऐसे अनेक कारण हैं। एफ॰ जे॰ हयूगल ने इसे जिस ढंग से व्यक्त किया है वह मुझे पसंद है, "यदि हम सुसमाचार सुनाने और मसीह के राज्य को फैलाने के परमेश्वर के महान उद्देश्यों में सहायता हेतु अपने अदने निवेदन को काम में लाने का उपाय पा लेते हैं तो हम पौलुस या डैविड ब्रेनार्ड या जार्ज मुलर या प्रेइंग हाइड़ की आत्मा और उत्साह से प्रार्थना करना आरम्भ करते हैं और वह **अवश्य ही** सुनी जायेगी और **महान** कार्य होंगे" (हयूगल 30)।

खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने का सबसे पहला कारण उनके लिये हमारा **प्रेम** है। प्रार्थना की व्याख्या इस प्रकार की गई है: "प्रेम अपने घुटनों पर।" निश्चय ही वह मानव-जाति के लिये परमेश्वर का प्रेम ही था जो यीशु को क्रूस तक लाया, वह उस धनवान पुरुष का अपने पाँच भाइयों के लिये प्रेम ही था जिसने उसे नरक में उनके लिये प्रार्थना करने विवश कर दिया, "ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ" (लूका 16:27-28); और प्रेम हमें मध्यस्थता के स्थान तक ले जायेगा।

शिकागो के ऐतिहासिक पैसिफिक गार्डन मिशन को नरक के विनाश के कगार पर खड़ी सैकड़ों आत्माओं को बचाने में परमेश्वर द्वारा प्रभावशाली ढंग से उपयोग में लाया गया है। और मुझे आश्चर्य नहीं होता कि अठारह फुट के नियॉन ज्ञापन-फलक "पैसिफिक गार्डन मिशन" पर 'आपके पीछे माँ की प्रार्थनायें थीं' यह स्मरण दिलाने वाला वक्तव्य सम्मिलित है। मात्र अनन्तकाल ही असंख्य आत्माओं की उस अविश्वसनीय संख्या को प्रगट करेगा जो माँ के प्रेम के आँसुओं और प्रार्थनाओं से बचाई गई हैं। निश्चय ही आत्माओं को बचाने में प्रेम ही हमारी महान सम्पत्ति है।

खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने हेतु दूसरा बाइबलीय आधार **विश्वास** है। यीशु ने कहा, "विश्वास करने वाले के लिये **सब कुछ** हो सकता है" (मर॰ 9:23)। निश्चय ही सब कुछ में आत्माओं का उद्धार भी सम्मिलित है। यदि आप किसी के उद्धार के लिये परमेश्वर पर विश्वास कर सकते हैं तो वह अवश्य हो जायेगा।

चार व्यक्तियों ने अपने लकवाग्रस्त मित्र को यीशु के पास लाया और यीशु ने **उनके विश्वास को देखकर** कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए" (मर॰ 2:5)। यद्यपि वे उसे चंगाई पाने के लिये लाये थे, उसने अपने पापों की क्षमा भी प्राप्त की। यह विश्वास की सामर्थ्य का एक अद्‌भुत प्रदर्शन है। यथार्थ में विश्वास स्वर्ग-राज्य का सिक्का है।

खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने हेतु मेरे पसंदीदा कारणों में से एक वह प्रभावशाली **सामर्थ्य** है जिसका श्रेय बाइबिल प्रार्थना को देती है। याकूब 5:16 के अनुसार "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से **बहुत कुछ हो सकता है**।" हम इसे समझना आरम्भ भी नहीं कर सकते हैं कि वास्तव में प्रार्थना कितनी अविश्वसनीय रीति से सामर्थ्यशाली है क्योंकि यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में किसी भी प्रकार का सर्वाधिक प्रभावशाली असर डालने का कार्य करती है।

"प्रार्थना उच्चकोटि का एक ऐसा कार्य है जो मनुष्य की कल्पनाशक्ति से परे है। क्योंकि जब एक मसीही प्रार्थना करता है तो उसकी सफल होने की क्षमता और भलाई करने की उसकी सामर्थ्य हजार ही नहीं, सैकड़ों हजार गुणा बढ़ जाती है। यह अतिशयोक्ति नहीं है, इसका कारण यह है कि जब मनुष्य प्रार्थना करता है तब परमेश्वर कार्य करता है" (हयूगल 10)।

जब द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापान पर परमाणु बम गिराया गया था, लगभग 92,000 व्यक्ति मारे गये थे। परन्तु जब अश्शूर ने यरूशलेम को ऐसा घेरा कि हिजकिय्याह राजा अपनी प्रजा के लिये परमेश्वर के सामने चिल्ला पड़ा, परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को भेजा जिसने एक ही रात में 1,85,000 अश्शूरी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। हिजकिय्याह की प्रार्थना उस परमाणु बम से **दुगुनी** विध्वंसक थी!! यदि प्रार्थना सेनाओं को नष्ट करने में इतनी पर्याप्त सामर्थी है, तो आत्माओं को बचाने में उसकी सामर्थ्य निश्चय ही कितनी अधिक होगी!

यदि खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने हेतु हमारे पास इसके अलावा अन्य कोई बाइबलीय आधार नहीं होता कि परमेश्वर हमसे ऐसा करने की **अपेक्षा करता है**, तौभी यह पर्याप्त होता। परमेश्वर ने "अचम्भा किया" था कि उसे इस्त्राएल के लिये एक भी मध्यस्थ नहीं मिला (यशायाह 59:16)। यह मुझे बताता है कि वह कुछ मध्यस्थ पाने की आशा कर रहा था।

परमेश्वर द्वारा मध्यस्थी की प्रार्थना करने वालों की खोज पर एन्ड्रू मुरे की टिप्पणी सुनिये: "उसे (परमेश्वर को) बहुधा विस्मय और शिकायत होती थी कि कोई मध्यस्थ नहीं था, कोई उसकी सामर्थ्य को कार्यान्वित करने के लिये अपने आप को झकझोरने वाला नहीं था। और हमारे दिनों में भी वह प्रतीक्षा करता है और विस्मित होता है कि अधिक मध्यस्थ नहीं हैं; कि उसकी सभी संतान अपने आप को इस सर्वोच्च और पवित्र कार्य के लिये नहीं देती हैं, कि अनेक जो ऐसा करते हैं वे इसमें तन-मन की पूर्णता और दृढ़ता से नहीं जुटते हैं। वह सुसमाचार के ऐसे सेवकों से मिलकर अचम्भित

होता है जो शिकायत करते हैं कि उनके कार्य उन्हें ऐसा करने के लिये समय नहीं मिलने देते हैं जब कि वह उसे उनका प्रथम, उनका सर्वोच्च, उनका सर्वाधिक आनन्ददायक, **उनका एकमात्र प्रभावी कार्य** मानता है" (मुरे 114)।

परमेश्वर ने दूसरों के लिये प्रार्थना करने के कार्य को हमारे जीवन की **प्राथमिकताओं में सर्वप्रथम** स्थान दिया है। परमेश्वर के हृदय की पुकार सुनिये, "मैं **सब से पहले** यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और **निवेदन**, और धन्यवाद, **सब** मनुष्यों के लिए किए जाएँ . . . जो यह चाहता है कि **सब** मनुष्यों का **उद्धार हो**, और वे सत्य को भली-भाँति पहचान लें" (1 तीमुथियुस 2:1-4)।

यूनानी भाषा में प्रथम (पहला) के लिये "प्रोटान" शब्द है और स्ट्राँग के शब्दकोश में इसे समय, स्थान, क्रम या महत्व में पहला या श्रेष्ठ होना कहा गया है। इसलिए कि परमेश्वर चाहता है कि सब मनुष्य उद्धार पाएँ, और चूँकि कोई भी व्यक्ति प्रार्थना के बिना उद्धार नहीं पा सकता है, क्या इसमें कोई आश्चर्य है कि परमेश्वर जो कुछ कार्य हमसे चाहता है उस सूची में प्रार्थना सबसे ऊपर है?

इसके साथ ही, खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने हेतु हमारे लिए प्रभावशाली प्रेरणास्त्रोत में बाइबलीय **उदाहरण** भी हैं। उनमें से सबसे बड़ा उदाहरण प्रभु यीशु स्वयं है। यशायाह 53 की भविष्यवाणी कहती है कि वह "अपराधियों के लिये विनती करता है।" यह भविष्यवाणी अक्षरशः पूरी हुई जब उसने क्रूस पर यह प्रार्थना की, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)।

दूसरों के लिये प्रार्थना करने में यीशु हमारा स्थायी नमूना होना चाहिये क्योंकि वह अभी भी वही कर रहा है!!! वह हमारा उद्धारकर्त्ता, प्रभु और स्वर्ग में विराजमान राजाओं का राजा है, तथापि अभी भी वह दूसरों के लिये लगातार प्रार्थना कर रहा है। इब्रानियों 7:25 मेरे मन को झकझोर देता है, "इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि **वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।**"

अनुसरण करने के लिये दूसरा अच्छा उदाहरण प्रेरित पौलुस है। रोमियों 10:1 में उसकी करुणा से भरी स्वीकारोक्ति है, "हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उनके लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएँ।" बॉर्न फॉर बैटल में आर० आर्थर मैथ्यूस्, **मेरी प्रार्थना** का वर्णन इस प्रकार करते है, "अपने स्वाभाविक जीवन में परमेश्वर के अधिकार का हठ से तिरस्कार करने और अपने पापों के कारण नाश होने वाले लोगों के लिये खाली स्थान में खड़े होने वाले और मध्यस्थी करने वाले मनुष्य के लिये ईश्वरीय खोज की समाप्ति" (मैथ्यूस 104)। हमारे लिये एक मात्र प्रश्न यही है, "क्या हम उनके उदाहरण का अनुसरण करेंगे?"

यद्यपि इस प्रकार की मध्यस्थी की प्रार्थना के लिये अन्य अनेक प्रभावशाली बाइबलीय आधार हैं जिनका हम उल्लेख कर सकते हैं परन्तु मैं मात्र और एक ही

का उल्लेख करना चाहता हूँ - परमेश्वर ने इसे हमारी **जिम्मेवारी** बनाया है!!

परमेश्वर के "याजकों का पवित्र समाज" (1 पतरस 2:15) का सदस्य होना हमें दूसरों के प्रति जिम्मेवार बनाता है क्योंकि याजक स्वर्ग के सामने पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारा प्राथमिक कर्तव्य मानव-जाति और परमेश्वर के मध्य खड़े होकर उसके सम्मुख उनके मामले में याचना करना है। बिलकुल यही कार्य हारून ने किया जब वह इस्त्राएल के पाप के कारण फैली महामारी को रोकने के लिए हाथ में धूपदान लेकर मृतकों और जीवित के मध्य खड़ा हो गया (गिनती 16)।

चूँकि हम सब जो उद्धार पाये हुये हैं याजक हैं, हम सब की जिम्मेवारी है कि खोये हुओं के लिये मध्यस्थी की प्रार्थना करें, और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो वे अपना अनन्तकाल आग की झील में बितायेंगे। एस० डी० गॉर्डन के मर्मस्पर्शी निवेदन को अपने हृदयों से बात करने दीजिए : "मैं दृढ़ विश्वास का विरोध नहीं कर सकता - मुझे ऐसा कहना बिलकुल पसन्द नहीं है, यदि मैंने अपनी या आपकी भावनाओं का सम्मान किया होता तो ऐसा नहीं कहता। परन्तु मैं इस दृढ़ विश्वास का विरोध नहीं कर सकता कि उस निचले, खोये हुये जगत में लोग हैं जो वहाँ इसलिये हैं क्योंकि कोई एक व्यक्ति अपने जीवन को परमेश्वर के साथ जोड़ने और प्रार्थना करने में असफल हो गया" (गॉर्डन 194-195)।

मेरी प्रार्थना है कि इन प्रभावशाली बाइबलीय कारणों को आप यह अवसर देंगे कि वे आपको प्रेरणा दें कि आप खोये हुओं के लिये ऐसी प्रार्थना करेंगे जैसी इसके पूर्व कभी नहीं की हो।

अध्याय ३

व्यक्तिगत घटक

प्रत्येक उत्तर-प्राप्त प्रार्थना में **धार्मिकता** और **विश्वास** ये दो घटक या शर्तें सम्मिलित होती हैं। जो धार्मिकता हमें परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन तक पहुँचने का साहस प्रदान करती है वह मसीह द्वारा **दी गई** धार्मिकता है, जो उसके बहाये गये लहू से आती है। यह प्रभावी प्रार्थना के लिये नितान्त अनिवार्य है। परन्तु **व्यक्तिगत** धार्मिकता भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भजन संहिता 66:18 में लिखा है, "यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी **न** सुनता।" सम्भवत: यीशु ने इसका सबसे अच्छा सारांश दिया जब उसने कहा, "यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरा वचन तुम में बना रहे तो जो चाहो माँगो, और वह तुम्हारे लिये हो जायेगा" (यूहन्ना 15:7)। दूसरे शब्दों में, आज्ञाकारी मसीही अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाते हैं।

उत्तर-प्राप्त सभी प्रार्थनाओं का अन्य आवश्यक घटक विश्वास है। यह आत्मिक क्षेत्र का अटूट नियम है। यह **हमेशा** के लिये यही है: "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो" (मत्ती 9:29)। अविश्वास यह हमारा निरन्तर का न छुटने वाला पाप है और प्रार्थनाओं का उत्तर न मिलने का बहुधा यही कारण होता है।

इसलिये जब हम खोये हुओं के लिये प्रार्थना करते हैं तो हमें धार्मिकता (मसीह द्वारा दी गई तथा व्यक्तिगत) और विश्वास की आवश्यकता होती है। परन्तु आठ और दूसरे घटक हैं जो इस कार्य के लिये विशिष्ट रीति से महत्वपूर्ण हैं। इनमें से पहला **टूटा मन** है। "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने **पाएँगे**" यह आत्मिक फसल का नियम है। तथापि, हम हृदयविदारक दु:ख के बिना फसल चाहते हैं। लेनार्ड रेवनहिल ने एक बार कहा, "परमेश्वर बहुत-सी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता क्योंकि वे या तो अत्यधिक आत्म-सहानुभूति से भरी होती हैं या फिर उनका लक्ष्य व्यक्तिगत लाभ होता है। **वह व्याकुलतापूर्ण प्रार्थना का उत्तर देता है**" (रेवनहिल 110)। और जब तक हम आत्माओं के लिये व्याकुल नहीं हो जायेंगे, संभव है कि उनके लिये की गईं हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलेगा। क्योंकि जैसा यीशु यरूशलेम के लिये रोया वैसा ही अवश्य है कि हम भी अपने खोये हुये प्रियों के लिये रोयें यदि हम वास्तव में उन्हें भी उद्धार पाया हुआ देखना चाहते हैं।

एक समय सेल्वेशन आर्मी के कुछ कार्यकर्ताओं ने जनरल विलियम बूथ को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने स्वयं की निन्दा की कि वे आत्माओं को जीतने में अप्रभावी हो रहे हैं, और पूछा कि उन्हें क्या करना चाहिये। उन्होंने दो शब्दों का सन्देश वापस भेजा, "आँसू आजमाओ।" आँसू इतने **प्रबल** हैं कि जब उन्हें सुसमाचार-प्रचार के साथ जोड़ दिया जाता है, परमेश्वर एक फलदायी फसल की गारंटी देता है (भजन संहिता 126:5-6)।

अन्य महत्वपूर्ण घटक **प्रसव-पीड़ा** है। यह प्रसव की असह्य कष्टदायक वेदना को चित्रित करता है जैसा यशायाह 66:8 में दिखाई देता है, "सिय्योन को प्रसव-पीड़ा उठी ही थी कि उस से सन्तान उत्पन्न हो गये।" स्ट्राँग का शब्दकोश प्रसव-पीड़ा को इस प्रकार परिभाषित करता है: "दर्द से तड़पना, कष्टदायक पीड़ा से दुहरा हो जाना।" लूका 22 में यीशु की तड़प और उसका पसीना लहू की बूँदों के रूप में टपकने का वर्णन है। हममें से अधिकांश अपने प्रार्थना के जीवन में यहाँ तक कभी नहीं आये हैं। यही कारण है कि क्यों हम खोये हुओं को मसीह के लिये जीतने में अद्‌भुत परिणाम नहीं देखते हैं।

यीशु ने उद्धार के अनुभव का वर्णन "नया जन्म" पाना के रूप में किया है। जैसे एक माँ अपने बच्चों को शारीरिक जन्म देने में पीड़ा का अनुभव करती है वैसा ही आत्मिक क्षेत्र में भी सत्य है। पौलुस आत्मिक रूप से अपरिपक्व गलातियों के लिये, जिन्हें उसने मसीह के लिये जीता था, कहता है, "मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।" परन्तु जैसे एक पुरुष अपनी पत्नी की प्रसव-पीड़ा की तीव्रता को, जो वह अकेले झेलती है, पूर्णत: समझ नहीं सकता क्योंकि वह जन्म नहीं देता, वैसे ही अधिकांश मसीही आत्माओं के जन्म के लिये प्रसव-पीड़ा का महत्व नहीं समझते हैं क्योंकि लगभग **पन्चान्वे प्रतिशत** मसीही मसीह के लिये एक आत्मा भी कभी नहीं जीतते!!

मेरे आदर्शों में से एक जॉन "प्रेइंग" हाइड़ हैं, जो भारत में मिशनरी रहे, जिन्होंने आत्माओं के उद्धार के लिये प्रार्थना करने में अपना जीवन अक्षरश: लगा दिया। उन्होंने 1908 में परमेश्वर से प्रार्थना की कि उन्हें प्रतिदिन एक आत्मा दे। उस वर्ष उन्होंने चार सौ से अधिक लोगों को मसीह के लिये जीत लिया। अगले वर्ष उन्होंने प्रतिदिन दो आत्माओं के लिये प्रार्थना की (मात्र प्रार्थना करने हेतु नहीं परन्तु बपतिस्मा लेकर मसीह के लिये समर्पित होने के लिये) और आठ सौ से अधिक आत्माओं को मसीह के लिये जीत लिया। तत्पश्चात् 1910 में उन्होंने प्रतिदिन चार आत्माओं के लिये प्रार्थना की और परमेश्वर ने उनकी विनती को पूरा किया। परन्तु इस वर्ष के दौरान, इसलिये कि उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा, एक मित्र ने उन्हें चिकित्सक के पास जाने के लिये मना लिया। आत्माओं के लिये प्रसव-पीड़ा सहने में उनके द्वारा चुकाई गई कीमत को हम समझे इसलिये आइये हम सुनें कि चिकित्सक ने उनसे क्या कहा, "हृदय की दशा भयानक रीति से खराब है। मैंने इतना खराब हृदय कभी नहीं देखा है। वह बाईं ओर की अपनी सामान्य स्थिति से हटकर दाईं ओर चला गया है। घोर परिश्रम और तनाव के कारण वह इतनी खराब स्थिति में है कि उसे वापस थोड़ा बहुत अपनी पहले जैसी सामान्य दशा में लाने के लिये बिलकुल शान्त जीवन के अनेक महीने और महीने लग जायेंगे। आप अपने साथ क्या कर रहे थे? यदि आप घोर परिश्रम, तनाव को त्याग कर अपना संपूर्ण जीवन बदल नहीं लेते तो आपको छ: महीनों के भीतर इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी" (कैरी 44)।

यदि हम अपने प्रभु के साथ अंधकार के राज्य से आत्माओं को छुड़ाने के लिये संघर्ष करने में जुड़ जायेंगे तो हमें उसका मूल्य चुकाना होगा। परन्तु ऐसा करना पूर्णत: उचित ही होगा!! इसलिये आइये हम उस महान दल के साथ जुड़ जायें जिन्होंने "अपने प्राणों को प्रिय न जाना" (प्रका॰ 12:11), और विजय हमारी होगी।

बाइबिल में खोये हुओं की दयनीय स्थिति से सम्बन्धित दिये गये अनेक शब्द-चित्रांकन के द्वारा हम सरलता से देख सकते हैं कि प्रार्थना में **दृढ़ता** (डटे रहना या आग्रह) क्यों एक आवश्यक घटक बन जाती है। यशायाह 14:17 में खोये हुओं का वर्णन ऐसे बन्दियों के रूप में किया गया है जिन्हें शैतान छोड़ना नहीं चाहता है। प्रेरितों के काम 26:18 हमें बताता है कि वे शैतान के अधिकार के अधीन या क्षेत्र में हैं। तथापि सर्वाधिक डरावना चित्रण यीशु के द्वारा मरकुस 3:27 में एक बलवन्त मनुष्य के घर के रूप में दिया गया है। वह हमें यहाँ तक बताता है कि "कोई मनुष्य" उन व्यक्तियों की सहायता तब तक नहीं कर सकता जब तक कि बलवन्त मनुष्य को बाँधा न जाये।

नियंत्रण करने वाली कुछ दुष्ट आत्मायें इतनी बलवन्त होती हैं कि उन पर विजय पाने के लिये प्रार्थना और **उपवास** की आवश्यकता होती है (मरकुस 9:29)। दृढ़ (आग्रही) प्रार्थना की आवश्यकता इसलिये नहीं होती है कि परमेश्वर उन्हें बचाना नहीं चाहता परन्तु इसलिये होती है कि शैतान उन्हें छोड़ने में **अनिच्छुक** होता है!!

शैतान संपूर्ण राष्ट्रों और संस्कृतियों को भी नियंत्रित करने में सक्षम है। इसलिये मिशनरियों के लिये बहुधा कुछ जन-समूहों में सुसमाचार-प्रचार करने में प्रभावी ठहरना बहुत कठिन होता है। "कैरी को भारत में अपने प्रथम विश्वासी को बपतिस्मा देने में सात वर्ष लगे; जड्सन को बर्मा में पहला शिष्य पाने में सात वर्ष लगे; इसके पहले की प्रथम चीनी मसीह के पास लाया गया, मॉरिसन ने सात वर्ष कड़ा परिश्रम किया; मॉफेट घोषणा करते हैं कि अफ्रीका के अपने बेकुआना विश्वासियों के ऊपर पवित्र आत्मा के स्पष्ट अवतरण को देखने के लिये उन्हें सात वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी; बेन्जा मन्टाका में प्रथम विश्वासी प्राप्त करने के पहले हेनरी रिचर्ड्स ने कांगो में सात वर्ष व्यग्रता में बिताये" (गॉर्डन 139-40)।

शैतान की प्रिय रणनीतियों में से एक यह है कि परिस्थिति को अत्यंत असंभव दिखा दे ताकि हम निराश हो जायें और प्रार्थना करना छोड़ दें। वह ऐसा करता हैं इसके पीछे यही कारण है कि उसके पास प्रार्थना के विरुद्ध **कोई रक्षा** बिलकुल भी **नहीं** है। यह पुरानी कहावत सत्य है कि 'सबसे निर्बल संत को अपने घुटनों पर देखकर शैतान थरथराता है।' सभी प्रार्थनायें युद्ध हैं। और हालाँकि आप परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं देखते हैं तौभी जब आप प्रार्थना करते हैं, शैतान हारने लगता है।

तथापि, यदि हम यह देख सकते कि जब हम प्रार्थना कर रहे हैं तब आत्मिक क्षेत्र में क्या हो रहा है तो हम अत्यंत उत्साहित होते। क्या आपको स्मरण है कि

परमेश्वर ने किस प्रकार एलीशा के सेवक की आँखों को खोला जिससे वह उन घोड़ों और अग्निमय रथों को देख सका जो शत्रुओं से उनकी रक्षा कर रहे थे (2 राजा 6:17)? इसलिये, खोये हुओं के लिये प्रार्थना करते रहें, चाहे आप परिणाम **देखें** या न देखें, क्योंकि आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जा रहा है!!

इस प्रकार की दृढ़ता का अविश्वसनीय उदाहरण जार्ज मूलर के जीवन में देखने मिलता है। अपनी आरंभिक सेवकाई में उन्हें यह देखने में बहुत सफलता मिली थी कि जिनके लिये उन्होंने प्रार्थना की उनमें से बहुतों का तुरन्त मन-परिवर्तन हुआ था। इसलिये उनकी यह धारणा हो गई थी कि ऐसा हमेशा ही होगा। परन्तु इस संबंध में उनकी गवाही सुनिये, "यदि मैं यही कहूँ कि चौवन वर्ष और नौ महीने यीशु मसीह का विश्वासी रहने के दौरान मुझे प्रार्थना के **तीस हजार** उत्तर मिले, या तो विनती करते ही **उसी घड़ी** या **उसी दिन** तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी . . . परन्तु कोई यह सोच सकता है कि मेरी सभी प्रार्थनाओं का उत्तर इसी प्रकार शीघ्र मिला। नहीं, सभी का नही। कभी-कभी मुझे अनेक सप्ताह, महीने या वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी; कभी-कभी अनेक वर्ष ...। नवम्बर 1844 में मैंने पाँच व्यक्तियों के मन-परिवर्तन के लिये प्रार्थना करना आरंभ किया। मैंने, चाहे मैं बीमार था या स्वस्थ, भूमि पर था या समुद्र पर और मेरे कार्य का दबाव मेरे ऊपर चाहे कितना भी रहा हो, **प्रत्येक दिन**, बिना एक भी दिन नागा किये, उनके लिये प्रार्थना की। पाँच में से पहले व्यक्ति का परिवर्तन होने में अठारह माह लगे। मैंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और बाकी चार के लिये प्रार्थना करता रहा। और पाँच वर्ष बीत गये, और तब दूसरे का मन-परिवर्तन हुआ। मैंने दूसरे के लिये परमेश्वर का धन्यवाद किया और बाकी तीन के लिये प्रार्थना करता रहा। दिन-प्रतिदिन मैं उनके लिये प्रार्थना करता रहा और तीसरे के मन-परिवर्तन होने के पहले और छ: वर्ष बीत गये। मैंने तीसरे के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया और बाकी दो के लिये प्रार्थना करता रहा। यह दो बिना मन-परिवर्तन के रह गये। जिस मनुष्य की दसियों हजार प्रार्थनाओं का उत्तर परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के धन में, जिस दिन और जिस घड़ी वे की गई थीं, दिया वह इन दो व्यक्तियों के मन-परिवर्तन के लिये लगभग **छत्तीस वर्षों** से प्रतिदिन प्रार्थना करता रहा है और तब भी वे अपरिवर्तित ही हैं" (स्टीयर 246-47)।

परन्तु कहानी का अंत यही नहीं है। वे दिन-प्रतिदिन, वर्ष-प्रतिवर्ष प्रार्थना करते रहे और तब उन्होंने कहा, "महत्वपूर्ण बात यह है कि जब तक प्रार्थना का उत्तर न आये तब तक प्रार्थना करना नहीं छोड़ना चाहिये। मैं **तिरसठ वर्ष और आठ महीने** से एक व्यक्ति के मन-परिवर्तन के लिये प्रार्थना करता रहा हूँ। वह अभी तक उद्धार नहीं पाया है, परन्तु पायेगा। इसके विपरीत कैसे हो सकता है, . . . मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।" वह दिन आया जब मूलर के मित्र ने मसीह को ग्रहण किया। वह तब तक नहीं आया जब तक कि मूलर की शवपेटी कब्र में नहीं उतार दी गई। वहाँ खुली कब्र के पास इस मित्र ने परमेश्वर को अपना हृदय दिया। दृढ़ (आग्रही) प्रार्थनाओं ने एक और युद्ध जीत लिया था। मूलर की सफलता का सारांश इन तीन शक्तिशाली शब्दों में दिया जा सकता है: "उसने छोड़ा नहीं" (इस्टमैन 99-100)।

क्योंकि प्रार्थना एक संग्राम है, मैं सुझाव देना चाहूँगा कि मध्यस्थी की प्रार्थना में **आक्रमण** महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने हमें अविश्वसनीय अधिकार दिया है (मत्ती 16:19), और यह आदेश है कि उसका प्रयोग हम विशेषकर विश्व-व्यापि सुसमाचार-प्रचार में करें (मत्ती 28:18-20)।

हम विजेता (प्रका॰ 12:11) और "जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:37), और परमेश्वर हमसे आशा करता है कि हम उस बलवन्त मनुष्य पर, जो **हथियार से पूर्ण सुसज्जित** है, "चढ़ाई करके" **उसे जीत लें** ताकि "उसकी सम्पत्ति" को लूट लें (लूका 11:21-22)। जैसा हमने इसके पहले देखा है, शैतान आत्माओं को बन्दी बनाये हुये है और वह बिना युद्ध किये उन्हें जाने नहीं देगा! परन्तु हमें भी सदैव जागरूक रहना है कि "हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर . . . परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं" (2 कुरिन्थियों 10:4)। जब हम परमेश्वर के कवच और परमेश्वर के हथियारों को पहनकर युद्ध के लिये तैयार हैं, हम **प्रार्थना के द्वारा लड़ते** हैं (इफिसियों 6:10-18)।

परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को "अधोलोक के फाटक" के ऊपर आक्रमक हमला करके विजय पाने के लिये अत्यधिक सामर्थ्य से परिपूर्ण किया है। तथापि हम निष्क्रिय बैठे रहते हैं और नरक को "अत्यंत लालसा करके अपना मुँह बेपरिमाण" पसारने देते हैं (यशायाह 5:14)। रेवनहिल के इस त्रासदी को व्यक्त करने के सुस्पष्ट ढंग से मैं विचलित हो गया था: "न्याय के खतरे के विषय में कलीसिया में **दमघोटू उदासीनता** है" (रेवनहिल 80)।

जैसे लकडी का एक खूँटा एक बड़े हाथी को बाँध कर रखता है क्योंकि उसको यह विश्वास करने के लिये प्रशिक्षित किया गया है कि वह नहीं छूट सकता है इसी प्रकार जीवित परमेश्वर की कलीसिया शैतान के द्वारा हमारे प्रभावशाली सामर्थ्य और अधिकार के विषय में धोखे में रखी गई है (इफिसियों 1:17-23) कि हम **प्रयास ही नहीं करते**। और वह हमारे प्रियों को बन्दी बनाये रखता है जबकि हम सुस्ती और अविश्वास में दुर्बल हुये जाते हैं।

शैतान अपनी मूलभूत पराजय मानने से इनकार करता है। जब तक उसे विवश न किया जाये वह अपने किसी भी अधिकार-क्षेत्र को छोड़ने से इनकार करता है। वह अपने विरोध के सभी कार्यों का उग्र एवं तीखा प्रतिरोध करता है और जो कुछ उससे **ताकत से छीना** जाता है मात्र उसे ही देता है (नेविल 27)। इसलिये, आत्माओं के लिये युद्ध में आक्रमक होने का यह हमारा समय है क्योकि "स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवन्त उसे छिन लेते हैं" (मत्ती 11:12)।

जब दूसरों के लिये प्रार्थना करने की बारी आती है तब **गिड़गिड़ाकर विनती करना** (तर्क उपस्थित करना, याचना करना) बहुत प्रभावी होता है। बाइबिल में अनेक उदाहरण हैं: अब्राहम सदोम के लिये (उत्पत्ति 18), मूसा इस्त्राएल के लिये (निर्गमन 32), हिजकिय्याह यहूदा के लिये (2 राजा 19), और यह सूची बढ़ती ही

चली जाती है। गिड़गिड़ाकर विनती करने (तर्क उपस्थित करने या याचना करने) का अर्थ मूलत: यह होता है कि आप परमेश्वर को बाइबलीय कारण प्रस्तुत करते हैं कि उसे आपकी प्रार्थना का उत्तर क्यों देना चाहिये। प्रभु हमें यहाँ तक कहता है, "अपने प्रमाण दो" (यशायाह 41:21)।

ए॰ टी॰ पीयरसन कहते हैं, "हमें परमेश्वर के सामने अपनी बात के तर्क प्रस्तुत करने चाहिये, यह वास्तव में उसे मनवाने के लिये नहीं परन्तु अपने आप को मनवाने के लिये करने चाहिये। उसे यह प्रमाणित करने में कि वह स्वयं अपने वचन, प्रतिज्ञा और चरित्र के कारण हस्तक्षेप करने को बाध्य है, हम स्वयं अपना विश्वास प्रगट करते हैं कि उसने हमें माँगने और दावा करने का अधिकार दिया है और वह हमारी याचना का उत्तर देगा क्योकि वह अपना इनकार नहीं कर सकता है" (पीयरसन 150)।

स्पर्जन ने गिड़गिड़ाकर विनती करने (तर्क उपस्थित करने या याचना करने) की सामर्थ्य के विषय में प्रबलता से अनुभव किया है। उन्होंने कहा, "यह विश्वास की आदत है कि जब वह प्रार्थना कर रहा है तब तर्कों का उपयोग करे। मात्र प्रार्थना कहने वाले, जो वास्तव में प्रार्थना करते ही नहीं, वे परमेश्वर से तर्क करना भूल जाते हैं। परन्तु वे जो प्रबल होते हैं अपने कारणों और अकाट्य तर्कों को प्रस्तुत करते हैं और परमेश्वर के साथ प्रश्न पर वाद-विवाद करते हैं। हे भाइयों, आइये हम इस प्रकार आज्ञा, प्रतिज्ञा या जो कुछ भी हमारी सहायता कर सके, उसे याचना में काम लायें, परन्तु गिड़गिड़ाकर विनती करने के लिये अपने पास हमेशा कुछ-न-कुछ रखें। 'प्रार्थना कर ली' ऐसा तब तक न समझे जब तक कि आप गिड़गिड़ाकर विनती नहीं कर लेते, क्योंकि गिड़गिड़ाना (तर्क उपस्थित करना) ही प्रार्थना की मज्जा (सार) है" (स्पर्जन 49-50)।

जार्ज मूलर ने भजन संहिता 68:5 के "अनाथों का पिता" इन तीन शब्दों को लिया और अपने अनाथों के लिये विनती करने में इस वाक्यांश का बार-बार उपयोग किया। यह उनके अपने शब्द हैं: "परमेश्वर की सहायता से, अनाथों का सम्मान करते हुये, आवश्यकता की घड़ी में उसके सामने मेरा यह तर्क होगा। वह उनका पिता है, और इसलिये जैसा वह है उसने उनकी आवश्यकता की पूर्ति का वचन दिया है, और मुझे उसे इन गरीब बालकों की आवश्यकताओं का मात्र स्मरण दिलाना है ताकि उनकी पूर्ति की जाये" (पीयरसन 143)।

मुझे निश्चय है कि पवित्रशास्त्र में सैकड़ों पद हैं जिनका उपयोग हम आत्माओं के उद्धार के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करने (तर्क उपस्थित करने या याचना करने) में कर सकते हैं, परन्तु समय और स्थान के कारण मुझे उनमें से कुछ ही का उल्लेख करने दीजिये। हम अपने गिड़गिड़ाने में मनुष्य के लिये **परमेश्वर के उद्देश्यों** का तर्क उपस्थित कर सकते हैं (यिर्म॰ 1:5, लूका 19:10, पत॰ 3:9, प्रेरितों 26:18 और इफि॰ 2:5-7)। हम उद्धार से सम्बन्धित **परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं** का तर्क उपस्थित करते हुये गिड़गिड़ा सकते हैं (युहन्ना 3:16; यूहन्ना 1:12; रोमियों 10:13

और यूहन्ना 6:37)। हम बचाने के लिये **परमेश्वर की सामर्थ्य** का तर्क उपस्थित कर सकते हैं (इब्रा॰ 7:25, रोमियों 1:16; 1 कुरि॰ 2:4-5 और 1 पत॰ 1:3-5)। हम **परमेश्वर के व्यक्तित्व** की, जो मनुष्य के सम्बन्ध में है जैसे कि सृष्टिकर्ता, छुड़ानेवाला, पिता और प्रभु, का तर्क उपस्थित कर सकते हैं। हम मनुष्य के प्रति **परमेश्वर के गुणों एवं मनोवृत्ति** की अर्थात् उसके प्रेम, उसकी करुणा, उसके अनुग्रह, उसकी कोमलता और उसकी सहनशीलता का तर्क उपस्थित करते हुये गिड़गिड़ा सकते हैं। मेरे मनपसंद तर्कों में उसके द्वारा दूसरों का उद्धार करने में **भूतकाल में जो कार्य किये गये** हैं वे सम्मिलित हैं: नीनवे (एक अत्यंत बुरा शहर कि परमेश्वर ने उसका सत्यानाश करना ठान लिया था), गरादेनियों का भूतग्रस्त (जो वस्त्रहीन था, कब्रों के मध्य रहता था, इतना हिंसक था कि कोई उसके पास नहीं जा सकता था, समाज से बहिष्कृत था, दुष्ट आत्माओं की सेना से भरा हुआ था, हमारी जानकारी में सर्वाधिक बदतर व्यक्ति था), तरसुसवासी शाऊल (कलीसिया का विध्वंस करनेवाला), और लुद्दा और शारोन के सभी रहनेवाले (प्रेरितों 9:35)।

अन्य निर्णायक घटक जो अत्यंत सूक्ष्म हो सकता है और हमारी वर्षों की प्रार्थना को अप्रभावी बना सकता है वह है हमारा **अभिप्राय**! खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने में हमारा प्राथमिक अभिप्राय परमेश्वर की महिमा ही होना चाहिये (यूहन्ना 15:8)। परन्तु अनेक बार हमारे अभिप्राय घमंड और स्वार्थ से दूषित होते हैं। खानदान के नाम के घमंड के कारण माता पिता अपने "कुल-कलंक" संतान के लिये यह जाने बिना प्रार्थना कर रहे होगें कि उनका अभिप्राय दूषित है।

मैं अपने जीजा के लिये अनेक वर्षों तक बिना कोई प्रतिफल देखे प्रार्थना करता रहा। परन्तु जब उन्हें जानलेवा कैन्सर हो गया और मेरी प्रार्थनायें और अधिक सरगर्म हो गईं, परमेश्वर ने मुझ पर प्रगट किया कि उन व्यर्थ प्रार्थनाओं में स्वार्थ का रंग चढा था। आप देखिये, वह वास्तविक कारण कि मैं क्यों चाहता था कि उनका उद्धार होवे यह था कि मेरी बहन को अच्छा पति और मेरी भांजी और भांजों को अच्छा पिता मिल जाये। इसलिये परमेश्वर उनके लिये मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर **नहीं दे सका**। तथापि जब मेरा अभिप्राय शुद्ध हो गया, परमेश्वर ने उनका उद्धार किया!!

बाइबिल इस बिन्दु पर स्फटिक के समान साफ है: "तुम माँगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से माँगते हो, ताकि अपने भोग-विलास मे उड़ा दो" (याकूब 4:3)। यदि आप किसी व्यक्ति विशेष के लिये (विशेषकर परिवार का कोई सदस्य या अभिन्न मित्र के लिये) बिना प्रतिफल देखे लंबे समय से प्रार्थना करते आये हैं, तो आप अपने अभिप्राय को यह देखने के लिये जाँचना चाहेंगे कि वह शुद्ध (मुख्यत: परमेश्वर की महिमा के लिये) है या नहीं।

यदि न्यायालय में दूसरे पक्ष का वकील प्रश्न के किसी अंश, विशेष तर्क या विशेष गवाह की प्रस्तुति को न्याय-प्रक्रिया के बाहर का समझता है तो उसके लिये अपना विरोध प्रस्तुत कर सकता है। यदि न्यायाधीश उससे सहमत होता है तो उसके विरोध

को स्वीकार कर सकता है जिससे विधिहीन दांवपेंच रद्द और शून्य हो जाता है। आत्मिक क्षेत्र में भी ऐसा ही होता है। हम अपने खोये हुये प्रिय लोगों के लिये बाइबिल से दर्जनों कारण बताकर बहुत भावपूर्ण निवेदन कर सकते हैं **परन्तु** यदि हमारा अभिप्राय गलत है तो शैतान "विरोध" दर्ज करता है और परमेश्वर अवश्य उससे सहमत होता है और हमारे समस्त निवेदन और प्रार्थनाओं को रद्द और शून्य घोषित कर दिया जाता है!! और यदि हम अपने अभिप्राय को सही नहीं करेंगे तो जिसके लिये हम प्रार्थना कर रहे हैं वह मरेगा और नरक जायेगा।

मध्यस्थता का अन्य अनिवार्य तत्व **बलिदान की आत्मा** है। हम इसे प्रेरित पौलुस में देखते हैं, जो अपने यहूदी लोगों के उद्धार के लिये "मसीह से शापित" होने के लिये भी तैयार था (रोमियों 9:3); मूसा में देखते हैं जिसने अपने लोगों के पाप के कारण और चालीस दिन **और** रात उपवास किया और प्रार्थना की (व्यवस्था. 9:18-19); एस्तेर में भी देखते है जिसने घोषणा की, "यदि नष्ट हो गई, तो हो गई" (एस्तेर 4:16)।

जब एक बार मैं किसी सेमिनरी के विस्तार कक्षा में व्यक्तिगत प्रचार पर शिक्षा दे रहा था, मैंने "मैं आप के लिये नरक भी जाऊँगा" इस अभिलेख के साथ प्रार्थना विषयों के कुछ कार्ड छपवाये। विचार यह था कि उन लोगों के नाम लिखे जायें जिनके लिये हम उनके स्थान पर नरक भी जाने तैयार होंगे और उसी के अनुसार प्रार्थना करें। उन कार्डों को अपने विद्यार्थियों में वितरित करने के पश्चात् अगली कक्षा में उनमें से एक, एक पास्टर, ने कहा, "मैं नहीं सोचता कि मैं किसी के लिये नरक जाने का इच्छुक हूँ।" उसने एक रीति से हम सभी के मन की बात कह दी। यद्यपि परमेश्वर हमें अनुमति नही देगा कि हम किसी और के स्थान पर नरक जायें, तौभी यदि हम ऐसा चाहेंगे तो यह बात निश्चय ही उनके लिये हमारी प्रार्थना के प्रभाव को बढ़ायेगी!!

खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने में, अन्य सभी बातें समान होने पर भी, **एकता सर्वाधिक शक्तिशाली** घटक है। सामान्यत: यह **तत्काल** प्रतिफल देती है!! जैसे एक *मैग्निफाइंग लेन्स* सूर्य की बिखरी किरणों को एकत्र करके किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित करते हुये आग उत्पन्न कर सकता है, इसी प्रकार अनेक मसीही एक व्यक्ति विशेष के लिये एकता में प्रार्थना करके बलवन्त मनुष्य को खदेड़ सकते हैं, और **पुत्र** (यीशु) की सामर्थ्य को उसके जीवन पर केन्द्रित कर सकते हैं।

ठीक ऐसा ही विलियम कैरी के पुत्र याबेश के मन-परिवर्तन में हुआ। बैपटिस्ट मिशनरी सोसाइटी की लंदन में चल रही वार्षिक सभा के दौरान डॉ॰ रॉलैण्ड ने याबेश के लिये अत्यंत बोझ से भरकर कहा, "भाइयों, आइये हम याबेश कैरी के मन-परिवर्तन के लिये गंभीर शान्ति में विश्वव्यापी, सरगर्म और संयुक्त प्रार्थना परमेश्वर तक पहुँचाये।" जैसे कि एकाएक पवित्र आत्मा पूरी सभा पर उतर आया हो, सम्पूर्ण कलीसिया - कम से कम **दो हजार** व्यक्तियों की - ने अपने आप को मौन निवेदन में लगा दिया। शीघ्र ही कैरी को याबेश से उसके मन-परिवर्तन के विवरण से भरा पत्र

मिला, "और पाया गया कि उस पुन:जागृति का समय उस स्मरणीय प्रार्थना की **घड़ी** से लगभग पूर्णत: मिल रहा था" (गॉर्डन 87-88)।

जिम सिम्बाला बताते हैं कि वे कैसे अपनी बेटी क्रिस्सी के लिये ढाई वर्षों तक बिना कोई परिणाम देखे प्रार्थना मे संघर्ष करते रहे। तब एक मंगलवार रात्रि ब्रुकलिन टेबरनेकल् की प्रार्थना सभा के दौरान एक जवान महिला को लगा कि उन्हे क्रिस्सी के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। उस रात्रि "कलीसिया-भवन प्रसूति-कक्ष मे बदल गया। वहाँ कराहना और व्याकुल दु:साहस का आरंभ हुआ, मानो कहा जा रहा हो, 'शैतान, तुम्हें यह लड़की नहीं मिलेगी। उस पर से अपने हाथ उठा लो - वह वापस आ रही है!' और **बत्तीस घंटे** पश्चात वह आई (सिम्बाला 63-65)!

जब जोन्स, लुइसियाना के न्यू होप बैपटिस्ट चर्च के पास्टर ने अपनी कलीसिया को चुनौती दी कि वे एक परची पर किसी ऐसे व्यक्ति का नाम लिखें जिसका वे मन-परिवर्तित हुये देखना चाहते हैं और उसके लिये प्रार्थना करने की प्रतिज्ञा करने तैयार हैं, अठारह लोगों ने "माईक डोल्स" लिखा। **दो सप्ताह** के भीतर वह अद्‌भुत रीति से परिवर्तित हो गया।

अपने पति के उद्धार के लिये अठारह वर्ष तक बिना फल पाये प्रार्थना करने के बाद हेलन ग्रेशम ने अपने पास्टर, मिकी हड़नाल, से विनती की कि प्रार्थना में उसकी सहायता करें। रिकी के लिये की गई उन दोनों की प्रार्थना से वह **दो माह** से भी कम समय में अद्‌भुत रीति से बदल गया। और जब आप उसकी गवाही को पढ़ेगें तो यह जानकर कि परमेश्वर ने उन दिनों में उसके जीवन मे क्या-क्या किया आप आश्चर्य के साथ मुस्कुरायेंगे। तथापि वह नहीं जानता था कि उसकी पत्नी और उसका पास्टर उसके लिये प्रार्थना कर रहे थे।

आइये खोये हुओं के लिये एकता में की गई प्रार्थना के अद्‌भुत सामर्थ को दोबारा गिन लें: दो हजार लोगों ने याबेश कैरी के लिये प्रार्थना की और उसी घड़ी उसका मन-परिवर्तन हो गया, क्रिस्सी सिम्बाला के लिये सैकड़ों लोगों ने प्रार्थना की और बत्तीस घंटों के भीतर उसने पश्चाताप किया, अठारह लोगों ने माईक डोल्स के लिये प्रार्थना की और उसने दो सप्ताह के भीतर उद्धार पाया, दो ने रिकी ग्रेशम के लिये प्रार्थना की और वह दो माह से भी कम समय में पूर्णत: बदल गया!!

हे! यदि आप अपने प्रिय के लिये प्रार्थना करने में किसी और की सहायता प्राप्त कर सकते हैं तो आप नाटकीय परिणाम देखेंगे!! क्योंकि आत्मिक क्षेत्र में दो जन दस हजार को खदेड़ेंगे (व्यवस्थाविवरण 32:30) और दो जन प्रार्थना में "एक मन" होने से स्वयं प्रभु के कहने के अनुसार **हमेशा** अपने निवेदन के अनुरूप पायेंगे (मत्ती 18:19)।

मुझे बताने दीजिये कि खोये हुओं के लिये एकता में की गई (सम्मिलित) प्रार्थना क्यों इतनी सामर्थी होती है। पहली और सर्वप्रथम बात यह है कि परमेश्वर अपने लोगों

के मध्य एकता को अविश्वसनीय महत्व देता है। प्रभु की यह इच्छा हमारे लिये की गई उसकी प्रार्थना (यूहन्ना 17) में स्पष्ट दिखाई देती है जहाँ पाँच बार वह हम "एक हो" यह प्रार्थना करता है। इसी प्रकार परमेश्वर की सूची, कि हमें क्या करना चाहिये, में प्रथम बात यह है कि "प्रार्थना . . . सब मनुष्यों के लिये किये जायें . . . कि सब मनुष्यों का उद्धार हो" (1 तीमुथियुस 2:1-4)। अब जबकि एकता **बहुत-कुछ दुर्लभ** है और निवेदन करने वाले **अत्यंत दुर्लभ** हैं (परमेश्वर को इस्त्राएल में एक भी नहीं मिला - यशायाह 59:16), जब आप इन दोनों को एक साथ लाते हैं - **निवेदन में एकता** - तो आपके पास ऐसा कुछ है जो **दोहरा दुर्लभ** है। और परमेश्वर उसे इतना अनमोल समझता है कि वह इसे हमारी अनियंत्रित कल्पना से भी परे बहुतायत से आशीषित करता है!!!

दूसरा कारण सचमुच साधारण है - मात्र एक ही बलवन्त है जो एक व्यक्ति के जीवन को नियंत्रित कर रहा है। जब परमेश्वर के अनेक लोग उस एक बलवन्त के विरुद्ध आते हैं तो वह आसानी से पराजित हो जाता है "क्योंकि जो तुममें है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है" (1 यूहन्ना 4:3-4)। और तब "उसके घर को लूट" लेना अपेक्षाकृत सरल बात है। कई बार ऐसा होगा कि खोया हुआ व्यक्ति सहायता माँगने के लिये आपके पास आयेगा। जिम्बों बैरनटाईन के साथ भी यही हुआ था। मैंने जनवरी में उसकी पत्नी रेचल के साथ प्रार्थना करने के लिये वाचा बाँधी थी। दो महीने पश्चात् वह ऐसे तोड़ने वाले पश्चाताप में था कि वह मुझे खोजते हुये मेरे कार्यालय में आया। परन्तु मैं एक प्रार्थना अधिवेशन में इस विषय-वस्तु को सिखाते हुये अरकंसास में था। तब वह उद्धार का मार्ग जानने के लिये हमारी कलीसिया के अन्य प्रचारक के घर गया। वह मेरे वापस आने तक नही रुक सका, उसे वहाँ उसी समय उद्धार पाना था!

तीसरा कारण यह है कि घमण्ड तोड़ा जाता है। शैतान घमण्ड में वैसे ही निवास करता है जैसे परमेश्वर स्तुति में करता है। और जब तक कोई प्रार्थना की सहायता माँगने के लिये अपने आप को नम्र नहीं करता है, सामान्यत: शैतान उस परिस्थिति को अपने नियंत्रण में रखने में सक्षम होता है। और इसके अतिरिक्त, परमेश्वर स्वयं "अभिमानियों का विरोध करता है पर दीनों पर अनुग्रह करता है" (याकूब 4:6)। अनेक अवसर पर, जैसे ही मैं खोये हुये पति को गवाही देने का प्रयास करता, पत्नी मुझे उसके अच्छे गुणों को बताने का प्रयास करती। पत्नी का घमण्ड उसे अपने पति की अधम स्थिति को परमेश्वर के सामने स्वीकार नहीं करने देता। परिणामत-स्वरूप मैंने ऐसे पुरुषों में से एक को भी कभी मसीह के लिये नहीं जीता।

अध्याय ४

सुस्पष्ट निवेदन

हममें से अधिकांश किसी दूसरे के उद्धार के लिये प्रार्थना करने में कठिनाई का सामना करते हैं क्योंकि जो कुछ हम कहना जानते हैं वह यह कि, "परमेश्वर, कृपया अमुक व्यक्ति का उद्धार कर।" इस एक उक्ति को बार-बार प्रार्थना में दोहराने में हमें मूर्खता का अनुभव होता है, इसलिये प्रायः हम उसे कहना बन्द कर देते हैं और उस व्यक्ति के लिये प्रार्थना करना छोड़ देते हैं। तथापि इस प्रकार की प्रार्थना चार क्षेत्रों को सम्मिलित करती है: सम्बन्धित व्यक्ति, आत्मा-जीतने वाला, परमश्वेर का वचन और पुनःजागृति। जब हम इन क्षेत्रों की सुस्पष्ट बातों के लिये प्रार्थना करना सीखते हैं तब हमारा निवेदन चुनौतीपूर्ण एवं प्रभावी बन जाता है।

आरंभ करने के लिये, हम व्यक्ति विशेष का नाम लेकर प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उसके जीवन में पाँच बातें करे। सर्वप्रथम, हम प्रभु से माँगते हैं कि उसे**पवित्र करे**। यह अनोखा मालूम हो सकता है, परन्तु परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में छुटकारे के अपने कार्य को इसी प्रकार आरंभ करता है। वह किसी व्यक्ति को बचाने के**पहले** उसे उद्धार के लिये पवित्र करता या "अलग करता" है।

बाइबिल 1 पतरस 1:2 में बहुत स्पष्टता से इस सत्य की शिक्षा देती है, "और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार,**आत्मा के पवित्र करने** के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिए चुने गए हैं. . .।" 2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14 में भी वही बल दिया गया दिखाई देता है, "परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि **आत्मा के द्वारा पवित्र** बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ।"

यह इस प्रकार है कि परमेश्वर उस व्यक्ति के चारों ओर एक अदृश्य घेरा खींचता है और **तत्पश्चात्** वहाँ पर अपना प्रभाव डालना आरंभ करता है। यह देखना सरल है कि जो कुछ उस घेरे के "भीतर" आता है वह उस घेरे में स्थित व्यक्ति को**प्रत्यक्ष रीति से और अधिकाई से** प्रभावित करता है। जब परमेश्वर स्वयं उस घेरे के भीतर आता है तो अविश्वसनीय बातें होने लगती हैं जैसे कि आप इस पुस्तक में आगे दी गईं अनेक व्यक्तिगत गवाहियों को पढ़ते समय देखेंगे।

यह अद्‌भुत सच्चाई हममें से उनके लिये, जो दूसरों के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, बड़ा प्रोत्साहन हैं क्योंकि हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पवित्र आत्मा, जो फसल का प्रभु है, **हमेशा** अपने व्यक्ति को पाता है यदि एक बार वह उसे पवित्र कर देता है! एक बार कॉलेज के एक विद्यार्थी ने, जो अपने आप को नास्तिक कहता था, सी॰ एस॰ लुईस को यह समझाते हुये पत्र लिखा कि उसकी भेंट कुछ मसीही विद्यार्थियों से हुई जो उसे बड़े उत्साह से अपने विश्वास की गवाही सुना रहे थे। उनके द्वारा कही गईं कुछ बातों ने उसके विचारों को उद्वेलित कर दिया था, वह किसी बड़े संघर्ष में से गुजर रहा था। डॉ॰ लुईस ने क्या सोचा? लुईस ने उसे लिखा, "मैं सोचता हूँ कि तुम जाल के डोरों में आ चुके हो - पवित्र आत्मा तुम्हारे पीछे लगा हुआ है। मुझे शंका है कि तुम वहाँ से निकल सकोगे" (डन 118)।

अब हम माँगते हैं कि परमेश्वर उसे **आशीष** दे। जब यीशु ने अपने शिष्यों को "अपने खेत" काटने भेजा, उसने उन्हें सुस्पष्ट निर्देश दिये कि, "**पहिले** कहो, इस घर पर कल्याण हो" (लूका 10:1-5)। चूँकि वह **हमेशा परमेश्वर की भलाई** ही है जो व्यक्ति को मन फिराव करने की अगुवाई देती है (रोमियों 2: 4), यह हमारे लिये आदेशात्मक है कि हम परमेश्वर से उन्हें उदारता से आशीष देने की याचना करें।

परन्तु कभी-कभी जब दूसरों के उद्धार के लिये हमारी प्रार्थनायें शीघ्रता से परिणाम नहीं लाती, हम निराश और अधीर होने लगते हैं और गुप्त में इच्छा करते हैं कि परमेश्वर उन्हें "परेशानियों की छड़ी से पाठ पढ़ाये।" जब सामरियों के एक गाँव ने प्रभु का तिरस्कार किया, उसके शिष्य चाहते थे कि परमेश्वर उसे उसी स्थान पर जलाकर राख कर दे। उसने उन्हें डाँटकर कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों का नाश करने नहीं, वरन् बचाने के लिये आया है" (लूका 9:52-56)। यदि हम अपने प्रिय उद्धारकर्त्ता का अनुकरण करना चाहते हैं, हमें लगातार सभी लोगों के लिये परमेश्वर की भलाई की कामना करनी चाहिये। विशेषकर हमें उन लोगों के लिये परमेश्वर की सर्वोत्तम आशीषें माँगनी चाहिये जिनके लिये हम प्रार्थना करते हैं।

तीसरे, चूँकि उद्धार के लिये अपने पापी होने का बोध होना (दोषी सिद्ध होना) अत्यंत अनिवार्य है, हम परमेश्वर से माँगते है कि वह उस व्यक्ति को**पापी होने का बोध कराये**। मात्र पवित्र आत्मा ही किसी को पापी होने का बोध करा सकता है इसलिये अपनी प्रार्थना में यूहन्ना 16:8-11 की याचना करने से हम और भी अच्छा कर सकेंगे। पापी होने का बोध होने का मूलभूत अर्थ दोष के प्रति निरुत्तर कराना है। खोये हुओं का दोष या समस्या "यीशु पर विश्वास नहीं करना" में है और**यही वह** पाप है जिसके लिये पवित्र आत्मा दोषी सिद्ध करता है (युहन्ना 16:9)।

लोग अपने "पापों" को पहले से ही जानते हैं सिवाय इस पाप के कि वे मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। चूँकि यही **अकेला** ऐसा पाप है जो किसी को नरक के लिये दोषी ठहराता है, शैतान इसके प्रति उन्हें अंधा बनाये रखता है। इसलिये पवित्र आत्मा खोये हुये व्यक्तियों को इस **एक और एकमात्र बिन्दु** पर, उनके लिये प्रभु यीशु मसीह को उसकी महिमा में प्रगट करते हुये, पापों का बोध कराता है या मनवाता है ताकि वे उद्धार पा सकें। तथापि हमें यह जानना अवश्य है कि अपने पापों का बोध होना उद्धार पाने की यन्त्रवत् गारंटी नहीं दे देता है। जैसे पौलुस "धर्म और संयम और आने वाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया . . ." (प्रेरित के काम 24:25)। परन्तु बाइबिल कोई संकेत नही देती कि फेलिक्स ने कभी उद्धार पाया।

इसके आगे, हम प्रभु से उसके मन को सत्य के लिये**प्रदीप्त** करने की माँग करते हैं। एक व्यक्ति अपने उद्धार की आवश्यकता के प्रति दोषी सिद्ध हो जाने के पश्चात् भी, हो सकता है कि उसका वह मन जो सुसमाचार के लिये अंधा है, मसीह के महान सुसमाचार की ज्योति के प्रति बन्द ही रहे और वह आत्मिक अंधकार में ही पड़ा रहे (2 कुरिन्थियों 4:6)। एक बार जब हृदय और मन सत्य के लिये खोल दिया जाता है, परमेश्वर उसे सुसमाचार समझाने के लिये मसीहियों का उपयोग करता है। यद्यपि कूश देश का खोजा सत्य का खोजी था और स्पष्ट था कि यरूशलेम आराधना करने के लिये आया था, और उसके पास पवित्रशास्त्र की एक प्रति भी थी, वह स्वीकार करता है कि "**जब तक** कोई मुझे न समझाये . . ." वह नहीं समझ सकता है (प्रेरितों 8:26-39)।

कुरनेलियुस की कहानी इससे भी अधिक चित्ताकर्षक है (प्रेरितों 10)। "वह भक्त था और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।" वाह! वह उन मसीहियों से, जिन्हें हम जानते हैं, बहुत बेहतर था और तौभी वह अब तक खोया हुआ था -**वह** उद्धार का मार्ग **नहीं समझता था।** उसे स्वर्गदूत से निर्देश मिला था कि पतरस को बुला भेजे ताकि "जो कुछ तुझे करना है वह तुझे बता दे।" कुरनेलियुस और उसके साथ के लोग सुसमाचार के लिये ऐसे तैयार थे कि जैसे ही उन्होंने "वचन" सुना, पवित्र आत्मा उन पर उतर आया और **जब पतरस प्रचार कर ही रहा था** वे उद्धार पा गये!!

प्रभु से माँगे कि खोये हुओं के मन और हृदय को खोले - वह खोलेगा! तब वे महिमामय ढंग से उद्धार पा सकेंगे।

अब हम परमेश्वर से यह माँगने तैयार हैं कि उसका**उद्धार करे**। तथापि, उसके उद्धार को पूर्ण करने के लिये परमेश्वर को**जो कुछ करना** है उसके लिये हमें तैयार होना है क्योंकि परमेश्वर उसे पश्चाताप में लाने के लिये उसके जीवन में घटनाओं को सजाता है।

लूका 19:10, "मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है" इस पर टीका करते हुये शेफर कहते हैं, "इसका तात्पर्य खोये हुये व्यक्तियों को मात्र ढूँढ़ निकालने से कहीं अधिक होना चाहिये क्योंकि वे सभी स्थानों में पाये जाते हैं। यह शब्द खोये हुओं की उस आत्मिक तैयारी को सुझाता है जो उन्हें उद्धार के लिये आवश्यक शर्तों के साथ **समायोजित** करेगी" (शेफर 3-4)।

टोनी फोन्टीनाट के परिवार ने उसके उद्धार के लिये अनेक वर्ष प्रार्थना की थी। मई 22, 1982 तक उनकी प्रार्थनायें व्यर्थ जाती हुई दिखाई दीं। उस विनाशक दिन उसके विमान की दुर्घटना हो गई और वह इतना जल गया कि लगभग मरने ही वाला था। परमेश्वर ने उसका ध्यान खींच लिया - बाकी सब सरल था!

एक बार जब कोई व्यक्ति सुसमाचार ग्रहण करने तैयार हो तो किसी न किसी को उसके साथ सुसमाचार अवश्य बाँटना चाहिये। इसलिये स्वाभाविक बात यह है कि किसी को ऐसा करने के लिये भेजने हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करें। वास्तव में, वह हमें बिलकुल

ऐसा ही करने कहता है, "पके खेत तो बहुत हैं, पर मज़दूर थोड़े हैं**इसलिये** खेत के स्वामी से **विनती करो** कि वह अपने खेत काटने के लिये मज़दूर भेज दे" (मत्ती 9:37-38)।

क्योंकि मज़दूर **थोड़े** हैं इसका अर्थ (स्ट्राँग के शब्दकोश के अनुसार) "विस्तार, श्रेणी, संख्या, अवधि या योग्यता में छोटा" होता है, हमें इस क्षेत्र में परमेश्वर की सहायता के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। हम सर्वप्रथम उससे प्रार्थना करते हैं कि**और** मज़दूर **भेजे**। यूनानी भाषा के शब्द "एकबालो" में बल के प्रयोग का भाव है- धकेलना, बाहर निकालना, फेंकना।

क्या आपको स्मरण है कि योना को अपना वचन नीनवे में प्रचार करने के लिये भेजने में परमेश्वर को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? परमेश्वर ने उसे अक्षरश: "विवश किया" कि वह जाये! ऐसी ही मिलती-जुलती परिस्थिति उत्पन्न हुई जब कलीसिया अपने सुख-चैन की सीमा से बाहर निकलकर सुसमाचार-प्रचार करने के लिये अनिच्छुक थी। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि "यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरंभ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए" (प्रेरितों 8:1) परन्तु "जो तितर-बितर हुये थे, वे सुसमाचार सुनाते हुये फिरे" (प्रेरितों 8:4)।

जबकि मज़दूर मात्र संख्या में ही कम नहीं हैं परन्तु**अवधि और योग्यता** में भी अदने हैं, हम परमेश्वर से विनती करते हैं कि उन्हें उन अनिवार्य योग्यताओं से सुसज्जित करे जो उन्हें प्रभावी गवाह बनायेंगी। तथापि, हमें समझना चाहिये कि सभी प्रकार की साज-सज्जा परमप्रिय पवित्र आत्मा से ही आती है। सैमुएल चाडविक कहते हैं, "आत्मा की सामर्थ्य उसके व्यक्तित्व से अविच्छेद्य है . . . परमेश्वर अपने गुणों को अलग नहीं होने देता है। उसकी सामर्थ्य को चीर कर उससे अलग नही किया जा सकता है। वह उसकी उपस्थिति से अलग नही की जा सकती है . . . वह सामर्थ्य का मात्र देने वाला ही नहीं है वही उसे काम में लाता है। कोई दूसरा उसे काम में नहीं ला सकता है" (चाडविक 89)।

इसीलिये यीशु ने अपने चेलों को यरूशलेम में तब तक ठहरे रहने कहा जब तक "तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा" नहीं पा लेते (प्रेरितों 1:4-5)। तब उसने उनसे कहा, "जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे**गवाह होंगे**" (प्रेरितों 1:8)।

यद्यपि पवित्र आत्मा की भरपूरी हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है (प्रेरितों 2:38-39) तौभी पूरी कलीसिया इसे बहुत कम जानती है कि "उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं कितनी महान है" (इफिसियों 1:19)। परिणामत:, हमारे चारों ओर आत्मायें ओं की नाईं नरक में छलांग लगा रही हैं क्योंकि हम परमेश्वर के पवित्र आत्मा से महाशक्ति-सम्पन्न हुये बिना उन्हें रोकने में शक्तिहीन हैं। इसलिये हमे प्रार्थना करनी चाहिये कि प्रभु अपने कार्यकर्ताओं को पवित्र आत्मा से भरे, उन्हें सामर्थ्य (योग्यता एवं बल), निर्भीकता (प्रेरितों 4:31), बुद्धि (नीति॰ 11:30), लगन (कुल॰ 4:12-13), दया

(यहूदा 22-23) और अर्न्तदृष्टि (यिर्म॰ 33:3) से सुसज्जित करें। **और आत्माएँ उद्धार पायेंगी!!!**

जिनका उद्धार होना है उन व्यक्तियों के लिये और उनको गवाही देने वाले सेवकों के लिये प्रार्थना करने के पश्चात्, अब हम परमेश्वर के उस वचन के लिये प्रार्थना करें जो उनके साथ बाँटा जाना है। इसका कारण दोहरा है: सर्वप्रथम, परमेश्वर के वचन को सुने बिना कोई भी उद्धार नही पाता (रोमियों 10:14)। और दूसरा, शैतान परमेश्वर के वचन से घृणा करता है, लोगों को उसे ग्रहण करने से रोकने के लिये अपने सतत और द्वेषपूर्ण भ्रष्ट शैतानी प्रयासों से उस पर आक्रमण करता रहता है। चूँकि परमेश्वर का वचन खोये हुओं को दोषी सिद्ध करने (प्रेरित 2:37), स्वतंत्र करने (यूहन्ना 8:32), और उनका उद्धार करने (1 पतरस 1:23) के लिये आवश्यक है, शैतान ध्यान भंग करने (लूका 8:11-15), किलेबन्दी करने (2 कुरि॰ 10:4-5) और उसके स्थान पर दूसरी बात रखने (2 कुरि॰ 11:3-4) के द्वारा उसका प्रबल विरोध करता है।

परमेश्वर का वचन शैतान के लिये ठीक वैसा ही है जैसे सुपरमैन के लिये *क्रिप्टोनाईट* - वह उसे निर्बल और निस्सहाय बनाता है। वह बंधुओं को स्वतंत्र करने के द्वारा उसके राज्य का बड़ा अंश ले लेता है, "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:32)। परन्तु ध्यान दीजिये, यह सत्य नहीं है जो आपको स्वतंत्र करता है परन्तु सत्य जिसे आप **जानते हैं**। अत:, शैतान सभी हथकंडे अपनाता है कि लोगों को सत्य "जानने" से रोके।

अपने शिष्यों को बीज बोनेवाले का दृष्टांत समझाते हुये यीशु ने कहा कि शैतान **तुरन्त** आता है और वचन को, इसके **पहले** की लोग उसे समझे, चुरा ले जाता है (मरकुस 4:15)। इसी कारण यह आदेश है कि हम परमेश्वर के उस वचन के लिये, जो खोये हुओं को सुनाया जा रहा है, प्रार्थना करें।

खोये हुओं को बचाने के लिये परमेश्वर द्वारा अपने वचन का उपयोग करने हेतु प्रार्थना करने में हम पाँच विशिष्ट निवेदन करते हैं। प्रथम, कि उसका वचन "शीघ्र फैले" (2 थिस्स॰ 3:1)। इसका सीधा अर्थ है **बिना रुकावट** के: ताकि शैतान परमेश्वर के वचन के प्रवाह को किसी भी प्रकार से रोक न पाये। वह जितनी भी कल्पना कर सकता है उन सभी प्रकार से-वचन के संदेश वाहक को सताने और रुकावट डालने से लेकर वचन को विकृत करने, वचन की छपी हुई प्रतियों को नष्ट करने, वचन पर संदेह उत्पन्न करने और ऐसे अनेक उपायों के द्वारा - वह उसे रोकना चाहता है।

इसके बाद हम परमेश्वर के वचन को **महिमा मिलने** के लिये प्रार्थना करते हैं (2 थिस्स॰ 3:1)। इसका अर्थ होता है कि सुनने वालों के मध्य उसे अत्यंत आदर और सम्मान मिले। जब हम देखते हैं कि उसने "अपने वचन को अपने बड़े नाम से **अधिक** महत्व दिया है" (भजन 138:2), हम उसके वचन को नया सम्मान देते हैं। यथार्थ में परमेश्वर ही देहधारी वचन है। "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था. . और वचन देहधारी हुआ; . . और हमारे बीच में डेरा किया" (यूहन्ना 1:1, 14)।

हम परमेश्वर के वचन के **बढ़ने** के लिये भी प्रार्थना करते हैं। (प्रेरितों 12:24); क्योंकि फसल के नियमों में से एक यह है: "जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा" (2 कुरिन्थियों 9:6)।

हम परमेश्वर के वचन के **प्रबल होने** या बल का प्रयोग करने के लिये भी प्रार्थना करते हैं (प्रेरितों 19:20)। जैसे एक छोटा बीज, जब उसमें छिपे जीवन का बल बाहर आने लगता है तो कान्क्रीट पट्टी को फाड़ सकता है, उसी प्रकार हृदय में बोया गया परमेश्वर के वचन का बीज भी कर सकता है।

परमेश्वर के वचन के लिये मेरी मनपसंद प्रार्थना यह है कि वह **प्रभावी** हो। प्रेरितों के काम 14:1 कहता है, "इस प्रकार **बातें की** कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से **बहुतों ने विश्वास किया।**" हम अपनी विनती में यशायाह 55:11 दुहाई दे सकते हैं, "उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह **पूरा करेगा** और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह **सफल करेगा।**" परमेश्वर ने योजना बनाई है कि उसका वचन प्रभावी हो, उससे विनती करें कि वह उसे वैसा ही बनाये और आप इस प्रकार उसकी ईश्वरीय इच्छानुसार प्रार्थना करते होंगे और आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा!!

मुझे आपको स्मरण दिलाने दीजिये कि यहूदा इस्कारयोती परमेश्वर के जीवित वचन के **सम्पर्क में निरंतर** रहा और तौभी वह मर गया और नरक गया, और यीशु ने कहा "यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिए भला होता" (मरकुस 14:21)। फरीसी - अपने समय के सर्वाधिक धार्मिक लोग - शास्त्र के बहुत बड़े भाग को मुखाग्र सुना सकते थे, तौभी वे परमेश्वर के राज्य से उतने ही दूर थे जितना कोई हो सकता था।

हमें यह समझना चाहिये कि एक व्यक्ति **मात्र** तब ही उद्धार पा सकता है जब पवित्र आत्मा सुनने वाले के हृदय को अनुप्राणित (जीवित) करता है। यही कारण है कि हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि परमेश्वर का वचन उन लोगों के जीवन में प्रभावी हो जो उसे सुन रहे हैं!!

यदि हम सचमुच बहुसंख्य लोगों को उद्धार पाते देखना चाहते हैं तो हमें **पुन:जागृति** के लिये प्रार्थना करने की आवश्यकता है। **पुन:जागृति** के लिये उत्कृष्ट वचन इस प्रकार आरंभ होता है, "यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर **प्रार्थना** करें . . ." (2 इतिहास 7:14)। प्रार्थना के जिस प्रकार का उल्लेख यहाँ हुआ है, वह मध्यस्थी की प्रार्थना (निवेदन) है - दूसरों के लिये प्रार्थना करना। यह इस प्रकार हुआ कि जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की (दोनों स्थलों पर इब्रानी का एक ही शब्द है) तब ही परमेश्वर ने उसकी अपनी परिस्थिति को नाटकीय रूप से बदल दिया (अय्यूब 42:10)।

पुन:जागृति के समय में सभी प्रार्थनायें लगभग **पूर्णत:** दूसरों के लिये ही होती हैं। डंकन कैम्पबेल पुन:जागृति की व्याख्या इस प्रकार करते हैं, **"परमेश्वर से संतृप्त (परिपूर्ण) लोग"** (एडवर्डस् 26)। जब लोग परमेश्वर से संतृप्त (परिपूर्ण) हो जाते

हैं, वे स्वयं से कहीं अधिक दूसरों के लिये चिन्तित हो जाते हैं। आत्माओं के लिये जो धुन उसे (परमेश्वर को) है वह उनकी हो जाती है!!

पुनःजागृति के समय प्रार्थना की व्यापकता का वर्णन फिन्नी के शब्दों में सुनिये, "मैंने, एक से अधिक बार, कहा है कि उन पुनःजागृतियों के समय में जो प्रार्थना की आत्मा प्रबल थी **वही** उनकी **सुस्पष्ट विशिष्टता** थी। नये विश्वासियों में यह सामान्य बात थी कि अपने चारों ओर की **आत्माओं के परिवर्तन** के लिये परिश्रम से प्रार्थना करें और कुछ उदाहरणों में इतनी अधिक कि जब तक उनका शारीरिक दमखम लगभग समाप्त न हो जाये वे पूरी रात प्रार्थना करने बाध्य हो जाते थे। मसीहियों के मनों में पवित्र आत्मा ने बड़ा बोझ डाला था, वे अपने ऊपर **अमर आत्माओं का बोझ** लिये हुये प्रतीत होते थे . . मसीहियों को, वे जब कभी जहाँ कहीं मिले, आपस की बातचीत में मशगूल होने की अपेक्षा घुटनों पर गिरकर प्रार्थना करते हुये देखा जाना सामान्य दृश्य था।

न मात्र प्रार्थना सभाओं की संख्या और उसमें भाग लेने वालों की संख्या बढ़ गई . . . परन्तु गुप्त प्रार्थना की प्रबल आत्मा भी वहाँ थी। मसीहियों ने बहुत प्राथनायें की। उनमें से अनेक व्यक्तिगत प्रार्थना में घंटो बिताते थे। यह भी होता था कि दो, या अधिक, "यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये एक मन होकर उसे माँगे, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिये हो जायेगी" की प्रतिज्ञा का दावा करते और **किसी व्यक्ति-विशेष** को अपनी प्रार्थना का विषय बना लेते; और वे जिस सीमा तक आग्रह की प्रार्थना करते थे वह बहुत ही अद्भुत था। प्रार्थनाओं के उत्तर प्रत्येक क्षेत्र में इस **प्रकार प्रकट रीति से बढ़ते हुये** दिखाई देते थे जिससे कोई भी इस बात को मानने से बच नहीं पा रहा था कि परमेश्वर प्रतिदिन और प्रतिघंटा प्रार्थना के उत्तर दे रहा था" (फिन्नी 14-42)।

पुनःजागृतियों को मात्र सरसरी रीति से पढ़ने पर भी शीघ्र स्पष्ट होता है कि इस अवधि में सैकड़ों, हजारों और यहाँ तक कि लाखों आत्मायें मसीह के पास आई थीं। जोनाथन एडवर्ड्स ने तो यहाँ तक माना कि परमेश्वर अपना राज्य बढ़ाने के लिये पुनःजागृति को **प्रमुख साधन** के रूप में उपयोग करता है (एडवर्ड्स 26)। इसलिये यदि आप आत्माओं को उद्धार पाते देखना चाहते हैं तो **पुनःजागृति के लिये प्रार्थना कीजिये!!!**

अध्याय ५

आत्मिक युद्ध

खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने का प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर को इस बात के लिये मनवाना नहीं है कि वह उनका उद्धार करे क्योंकि मसीह को सम्पूर्ण जगत के पापों के लिये प्राण देने हेतु भेजने के बाद (1 यूहन्ना 2:2) वह "नहीं चाहता कि **कोई** नष्ट हो . . ." (2 पतरस 3:9)। परन्तु निश्चय ही इसका तात्पर्य आत्मिक युद्ध से है - उन्हें शैतानिक प्रभाव से स्वतंत्र कराना है ताकि वे उद्धार पा सकें।

उनकी दयनीय दशा के बाइबलीय वर्णन को पुन: अच्छी तरह से देखना हमारे लिये सहायक होगा कि इस गंभीर सत्य को समझे। खोये हुये लोग वे बन्दी हैं जिन्हें शैतान स्वतंत्र करना नहीं चाहता (यशा॰ 14:17), वे शैतान के प्रभुत्व और अधिकार-क्षेत्र के भीतर गुलाम हैं (प्रेरित 26:18), शैतान की संतान (युहन्ना 8:44), सुसमाचार के प्रति अंधे (2 कुरि॰ 4:3-4), शैतान के अनुसार चलने वाले (इफिसियों 2:2), शैतान की पकड़ में असहाय (1 यूहन्ना 5:19) और बलवन्त मनुष्य का घर हैं (मरकुस 3:27)।

इन बाइबिल अंशों में से कुछ का थोड़ा-सा विस्तार-पूर्वक वर्णन करने से हमें स्पष्ट चित्र मिलेगा। उदाहरण के लिये, इफिसियों 2:2 में लिखा है "जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।" 'कार्य करता है' के लिये यूनानी भाषा में "एनर्जियों" शब्द है - क्रियाशील करना। इसका अर्थ है कि खोये हुये लोग अक्षरशः "शैतान के आत्मा द्वारा क्रियाशील किये हुये" हैं। निश्चय ही एक खोया हुआ व्यक्ति इसे नहीं जानता, और यदि जान भी गया तो निश्चय ही इसे स्वीकार नहीं करेगा। वह सोचता है कि वह स्वतन्त्र है (यह उसके खोयेपन का एक भाग है)। परन्तु सच्चाई यह है कि **उसकी यह कार्य-दिशा** आकाश के अधिकार के हाकिम के आदेश से **नियंत्रित है**" (डन 120)।

आइये हम 1 युहन्ना 5:19 देखें, "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।" इसका अर्थ यह है कि सारा संसार (उसके निवासियों सहित) उस दुष्ट के प्रभाव में दण्डवत् पड़ा हुआ है। वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार दण्डवत् पड़ा होना की परिभाषा "दयनीय समर्पण में भूमि की ओर मुँह करके साष्टांग लेट जाना; पूर्णतः अधीन हो जाना" है। इस पद के विषय में, स्टॉट संसार के लिये कहते हैं, "वह दुष्ट में हैं, उसकी पकड़ में और उसके नियंत्रण में है। इसके अतिरिक्त, वह वहाँ **पड़ा रहता है**। वह ऐसे नहीं दिखाया गया है कि मानो स्वतंत्र होने के लिये सक्रियता से जूझ रहा हो परन्तु शैतान की बाहों में शांत पड़ा हुआ है,

कदाचित् यह भी कि **बेसुध सोया हुआ है**। वह दुष्ट (अर्थात् शैतान) मसीहियों को नहीं 'छूता' परन्तु **संसार उसकी पकड़ में असहाय है**" (स्टॉट 193)।

और इसके बाद मैं मरकुस 3:27 को खोये हुओं को मसीह के लिये जीतने से संबंधित बाइबिल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद मानता हूँ। इस पद में यीशु स्वंय कहता है "परन्तु **कोई मनुष्य** किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल नहीं लूट सकता है, जब तक कि वह **पहिले उस बलवन्त को बाँध न ले;** और **तब** उसके घर को लूट लेगा।" यदि इस पद का कुछ अर्थ है तो यह है कि कोई भी खोया हुआ व्यक्ति तब तक उद्धार नहीं पा सकता है जब तक कि कोई उसे उन शैतानी प्रभावों से स्वतन्त्र न कर दे जो उसे नियंत्रित करते हैं। यह नितांत पहला कार्य है जिसे किया जाना अवश्य है। और स्वतन्त्र करने की यह प्रक्रिया प्रार्थना से ही पूरी की जाती है!!

आत्माओं के लिये युद्ध जीतने के लिये कुछ मूलभूत बातें हैं जिन्हें हमें पूरा करना आवश्यक है। इनमें सर्वप्रथम अपने ईश्वर-प्रदत्त हथियारों का उपयोग करना है। जब मैं अमेरीकी सेना में भरती किया गया तब मेरे सैनिक प्रशिक्षण का कुछ भाग उन शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना था जिनका उपयोग मैं वियतनाम युद्ध में कर सकता था। मुझे अपनी एम-16 रायफ़ल से इतना परिचित हो जाना था कि मैं उसे अंधकार में भी खोलकर पुनः जोड़ सकूँ क्योंकि युद्ध-क्षेत्र में इसी एक करतब के द्वारा जीवन की रक्षा कर पाने की संभावना मानी जाती थी।

परमेश्वर ने हमें इस आत्मिक युद्ध में उपयोग करने हेतु शक्तिशाली हथियार दिये हैं "क्योंकि हमारी लड़ाई के **हथियार** शारीरिक नहीं पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं" (2 कुरिन्थियों 10:4)। हमारी समस्या यह है कि हम न तो अपने हथियारों से और न ही सच में युद्ध से परिचित हैं ।

परन्तु इसके पहिले कि मैं आपको आपके हथियारों और उनके उपयोग से परिचित कराऊँ, मुझे स्मरण दिलाने दीजिये कि असली लड़ाई प्रार्थना है - हम **प्रार्थना करने के द्वारा लड़ते हैं**। मैंने भाई मिकी बॉनर को अनेक बार यह कहते सुना है कि **सभी प्रार्थनायें युद्ध है!!** इसलिये जब हम प्रार्थना नहीं कर रहे हैं, शैतान हमारी गलती से जीत रहा है, परन्तु जब हम प्रार्थना कर रहे हैं तब उसके पास सुरक्षा का कोई भी उपाय नहीं है। क्या इसी कारण परमेश्वर हमसे चाहता है "निरंतर प्रार्थना करो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:17) और प्रेरितों ने अपने आप को "**निरंतर प्रार्थना** और वचन की सेवा" (प्रेरितों के काम 6:4) में लगाये रखा?

जैसे सभी भौतिक हथियार, चाहे बमवर्षक, टैंक, मिसाईल, ग्रेनेड, रायफ़ल इत्यादि, एक ही उद्देश्य - शत्रु को हराना - के लिये प्रयोग किये जाते हैं, ठीक वैसे ही सभी आत्मिक हथियार भी उसी के लिये प्रयोग किये जाते हैं! इसलिये आइये हम अपने शक्तिशाली हथियारों से परिचित हो जायें और जब हम प्रार्थना करें तब उनका उपयोग करें।

यीशु का लहू हमारे सर्वाधिक सामर्थी हथियारों में से एक है। प्रकाशितवाक्य 12:11 कहता है, "वे मेम्ने के लहू के कारण . . . उस पर जयवन्त हुये।" इब्रानियों

2:14 हमें बताता है कि प्रार्थना में यीशु के लहू का सहारा लेकर विनती करना क्यों इतना सामर्थी है: "मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।" स्ट्राँग के शब्दकोश के अनुसार 'निकम्मा कर देना' की परिभाषा "पूर्णतः अनुपयोगी बनाना - शून्य कर देना" है।

"जब शैतान ने परमेश्वर के निर्दोष पुत्र का घात किया, उसने स्वयं को ही निकम्मा कर लिया . . . अस्तित्व मिटा लिया ऐसा नहीं परन्तु पूर्णतः निकम्मा कर लिया। आदम के पाप में गिरने के द्वारा उसने पृथ्वी और मनुष्य पर जो संपूर्ण न्यायिक अधिकार प्राप्त किये थे वे अब पूरी रीति से समाप्त हो चुके हैं; क्रूस के बाद से अब किसी भी व्यक्ति या वस्तु पर उसका कोई भी अधिकार नहीं रह गया है। इसका अर्थ है कि अब जो भी अधिकार वह काम में लाता है वह मात्र धोखे और झूठ से काम में लाता है" (बिलहेमर 31)।

हम जब यीशु के लहू का सहारा लेकर विनती करते हैं तब हम शैतान और उसके सभी दुष्ट आत्माओं कों स्मरण दिलाते हैं कि वे पहले ही से हारे हुये हैं। यह आत्माओं के लिये युद्ध में विशेषकर महत्वपूर्ण हैं क्योंकि कलवरी पर मसीह के लहू बहाने के द्वारा सभी मनुष्यों के लिये पापों का ऋण चुका दिया गया है (1 यूहन्ना 2:2)। और शैतान **मात्र चूक से** आत्माओं को दास बनाकर रखता है - क्योंकि हमने इस बात पर बल नहीं दिया है कि वह उन्हें छोड़ दें!!

यीशु का नाम एक और महासामर्थी हथियार है! प्रभु के चेले अपने गवाही देने के मिशन से लौटकर आनन्दपूर्वक चिल्ला उठे, "हे प्रभु, तेरे नाम से **दुष्टात्मा भी** हमारे वश में हैं" (लूका 10:17)। और वे हमारे भी वश में हैं!

हमारे प्रभु यीशु का नाम आत्मिक क्षेत्र में क्यों इतना सामर्थी है इसके तीन बाइबलीय कारण हैं। सर्वप्रथम, वह **सृष्टिकर्ता होने** के कारण सभी के ऊपर प्रभु है: "क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या **सिंहासन क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार** सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं" (कुलुस्सियों 1:16)।

और दूसरा, वह **क्रूस पर मारे जाने** के द्वारा प्रभु है: "कि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् **शैतान** को निकम्मा कर दे, और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे उन्हें छुड़ा ले" (इब्रानियों 2:14-15)।

और तीसरा, वह **राज्याभिषेक** के द्वारा प्रभु है: "वह स्वर्ग में जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया और **स्वर्गदूत, और अधिकारी और सामर्थी** उसके अधीन किये गये हैं" (1 पतरस 3:22)।

चूँकि हम खोये हुओं के लिये मध्यस्थी करने और उनके स्वतन्त्र किये जाने की माँग करने में प्रभु यीशु के आज्ञा का सीधा पालन करते हैं, उन पर नियंत्रण करने वाली दुष्टात्माओं को आज्ञा माननी ही होगी क्योंकि वे भी उसके (यीशु के) नाम के अधीन हैं।

परमेश्वर का वचन एक और सामर्थी हथियार है जिसे हम प्रार्थना में प्रयोग कर सकते हैं। जैसा हमने पहले देख लिया है, विनती में वचन का सहारा लेना सचमुच प्रभावी है। परमेश्वर के वचन को "आत्मा की तलवार" भी कहा गया है (इफिसियों 6:17)।

चूँकि कलवरी पर शैतान अपने अधिकार और सामर्थ्य से पूर्णत: वंचित कर दिया गया था (कुलुस्सियों 2:15, इब्रानियों 2:14), अब उसे काम करने के लिये मात्र **झूठ** का ही सहारा है। तथापि, वह उसमें माहिर है, जैसा देखने में आता है कि वह "सारे संसार का भरमाने वाला है" (प्रकाशितवाक्य 12:9)। परन्तु परमेश्वर का वचन "सत्य" है और सत्य **हर बार** झूठ पर विजयी होता है। इसलिये, यदि हम प्रार्थना-युद्ध में परमेश्वर के वचन का लगातार उपयोग करें तो हम हर बार जीतेंगे और आत्मायें स्वतन्त्र की जायेंगी!!

स्तुति एक और शक्तिशाली हथियार है जिसका हम उपयोग कर सकते हैं क्योंकि जब हम परमेश्वर की स्तुति करना आरंभ करते हैं तब वह उस परिस्थिति में आ जाता है (भजन संहिता 22:3)। और युद्धस्थल पर प्रधान सेनापति का आ जाना कितना अद्‌भुत है! 2 इतिहास 20 में पाई जाने वाली कहानी स्तुति के सामर्थ्य की अद्‌भुत गवाही है। अनेक शत्रु देशों की संयुक्त सेनाओं द्वारा यहूदा पर आक्रमण हो रहा था। परिस्थिति इतनी खराब थी कि राजा यहोशापात ने समस्त यहूदा को "उपवास और प्रार्थना" करने का आह्वान दिया। परन्तु "जिस समय वे **गाकर स्तुति** करने लगे उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, **घातकों को बैठा दिया** और वे मारे गये" (पद 22)।

हममें से अधिकांश को इसकी संकल्पना ही नहीं है कि आत्माओं के लिये युद्ध में स्तुति कितनी सामर्थी है - क्या ऐसा हो सकता है कि उसकी महान सामर्थ को समझने के लिये हमने उसका पर्याप्त उपयोग ही नहीं किया है? जॉन हाईड़ की आत्माओं की खोज में स्तुति की निर्णायक भूमिका पर फ्रांसिस मैकगाव क्या कहते हैं सुनिये, "मुझे स्मरण है कि जॉन मुझे बताया करते थे कि यदि किसी दिन चार आत्मायें भेड़शाला में नहीं लाई जातीं तो रात्रि में उनके हृदय में इतना बोझ हो जाता था कि वह सचमुच दु:खदायी होता था और वे न ही भोजन कर सकते थे और न ही सो सकते थे। और तब प्रार्थना में वे अपने प्रभु से माँगते कि वह उन्हें दिखाये कि इस आशीष को पाने के मार्ग में उनके भीतर क्या बाधा थी। **उन्होंने निरन्तर यही पाया कि वह उनके जीवन में स्तुति की कमी होती थी।** यह आज्ञा - जो परमेश्वर के वचन में सैकड़ों बार दोहराई गई है - निश्चय ही **सर्वाधिक महत्वपूर्ण है**। तब वे अपने पाप का अंगीकार करते और लहू के द्वारा क्षमा को स्वीकार करते। तब वे परमेश्वर के किसी भी अन्य वरदान की नाईं स्तुति की आत्मा माँगते थे। इस प्रकार वे अपनी राख को मसीह की माला से, अपने शोक को मसीह के हर्ष के तेल से, अपनी बोझ की आत्मा को मसीह की बड़ाई के ओढ़ने (मेम्ने का गीत - **परमेश्वर की**, जो कुछ वह करने जा रहा था उसके लिये, **समय से पहले** स्तुति करना) से बदल लेते थे।

और जैसे-जैसे वे परमेश्वर की स्तुति करते, आत्मायें उनके पास आती थीं और **बाकी रह गई संख्या की क्षतिपूर्ति हो जाती थी**" (कैरे 39)।

उपवास हमारे शस्त्रागार का एक और सामर्थी परन्तु कम उपयोग किया जाने वाला हथियार है। उसे "सर्वाधिक प्रभावशाली सामर्थ्य" कहा गया है जो हमारे अधिकार में हैं। मेरा व्यक्तिगत विचार है कि उपवास, प्रार्थना की सामर्थ को कम से कम **दस गुणा** बढ़ा देता है!

हमारे युद्ध का उद्देश्य शत्रु को परास्त करना है और उसे प्रभावी बनाने के लिये उपवास की योजना बनाई गई है। यशायाह 58:6 को सुनिये, "जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ वह क्या यह नहीं कि अन्याय से बनाये हुये दासों, और अन्धेर सहनेवालों का **जुआ तोड़कर** उनको **छुड़ा लेना**, और सब जुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना?" एक अवसर पर जब चेले एक छोटे लड़के में से दुष्टात्मा नहीं निकाल सके तो यीशु ने उनसे कहा, "**यह जाति** प्रार्थना और **उपवास** के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय से नहीं निकल सकती" (मरकुस 9:29)।

एक अन्य शस्त्र जो आत्मिक क्षेत्र में बहुत प्रबल होता है वह **प्रेम** है। जो व्यक्ति प्रभु से अपने संपूर्ण व्यक्तित्व से प्रेम करता है और खोये हुओं से अपने समान प्रेम करता है उसे रोका नहीं जा सकता है!! प्रकाशितवाक्य 12:11 कहता है, "वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुये, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।"

जब आप किसी को बहुत प्रेम करते हैं तो उसे नरक से बचाने के लिये आप यथासंभव सब कुछ करेंगे। यह सच है कि प्रेम असफल नहीं हो सकता। प्रेम "सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है . . . कभी टलता नहीं" (1 कुरिन्थियों 13:7-8)।

अत: जब हम परमेश्वर द्वारा दिये गये हथियारों का उपयोग करते हुये प्रार्थना करते हैं तो क्या होता है? 2 कुरिन्थियों 10:4-5 हमें बताता है: "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खंडन करते है; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"

प्रार्थना के साथ जोड़े गये हथियार गढ़ों को ध्वस्त करने, कल्पनाओं को निरस्त करने और विचारों को बाँधने के लिये अभियोजित किये गये हैं। गढ़ वह मनोवृत्ति है जो परमेश्वर की इच्छा और वचन के विरोध में है। इस प्रकार हम शीघ्र देख सकते हैं कि एक व्यक्ति का मन ही युद्ध क्षेत्र है क्योंकि हम मनोवृत्ति, कल्पनाओं और विचारों से व्यवहार कर रहे हैं।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम इस बात को समझ लें कि जो कुछ मन (विचार) को नियंत्रित करता है वही व्यक्ति को भी नियंत्रित करता है। शैतान यदि

उद्धार न पाये हुये व्यक्ति के मन (विचार) को नियंत्रित करता रहेगा तो वह उसे उद्धार पाने से रोके रहने में सक्षम होगा। ऐसा करने के लिये उसके पास एक ही उपाय है कि उस व्यक्ति को सुसमाचार के प्रति अंधा बनाये रखे क्योंकि जो कोई अपने मन की "सही" दशा में है वह हर बार यीशु को ही चुनेगा, शैतान को नहीं, स्वर्ग को ही चुनेगा नरक को नहीं! जब गदरेनियों के देश में दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य में से दुष्टात्माओं की सेना को निकाला गया और वह स्वयं अपने लिये विचार और चुनाव कर सका – उसने न मात्र यीशु को चुना परन्तु उसके लिये एक ज्वलंत सुसमाचार-प्रचारक भी बना (मरकुस 5:15-20)।

"एक पुरानी कहावत के अनुसार जहाँ तक परमेश्वर से सम्बन्ध की बात है, मनुष्य एक स्वतन्त्र प्राणी है: सर्वथा, पूर्णत: स्वतन्त्र। और जहाँ तक पाप, स्वार्थ और पूर्वाग्रहों की बात है, वह इस पृथ्वी पर सबसे बड़ा गुलाम है। हमारी प्रार्थना का उद्देश्य उसके विचारों पर दबाव डालना या उन्हें बाध्य करना नहीं है; कभी भी नहीं। यह उसकी इच्छा को उन विकृत प्रभावों से **स्वतन्त्र कराना** है जो अब उसे उलटा-पुलटा (गलत) मोड़ रहे हैं। यह उसकी आँखों से धूल निकालना है ताकि उसकी दृष्टि स्पष्ट हो सके। **और** जब वह एक बार स्वतन्त्र है, ठीक-ठीक देखने के योग्य है, पूर्वाग्रहों के बिना बातों को सन्तुलित कर सकता है, तो सम्पूर्ण संभावना इस ओर है कि वह अपनी इच्छा का उपयोग मात्र सही का चुनाव करने में करेगा . . .। हमारी प्रार्थना है 'उसे दुष्ट से छुड़ा ले,' और क्योंकि यीशु बन्दीकर्ता पर विजेता है, छुटकारा अवश्य होगा। हम **बिना किसी शंका के** उनके, जिनके लिये हमारे हृदयों में बोझ है, जीवन परिवर्तन के लिये इस प्रकार की प्रार्थना से आश्वस्त हो सकते हैं। यीशु के नाम में की गई प्रार्थना मनुष्य के विचारों की रण-भूमि से शत्रु को खदेड़ देती है और उसे सही का चुनाव करने के लिये स्वतन्त्र छोड़ देती है" (गॉर्डन 192-94)।

अब जब हम समझ गये हैं कि परमेश्वर शैतान के गढ़ों को ध्वस्त करने के लिये हमारी प्रार्थनाओं का उपयोग करता है, तो आइये देखते हैं कि शैतान लोगों को उद्धार पाने से दूर रखने के लिये उनके जीवनों में इन गढ़ों का उपयोग कैसे करता है। इन गढ़ों में सर्वाधिक मजबूत गढ़ अविश्वास है। यह प्रत्येक व्यक्ति – उद्धार पाया हुआ या खोया हुआ – में प्रमुख गढ़ है। इसकी योजना एक मसीही में इस प्रकार की गई है कि उसे परमेश्वर के वचन की उन विशिष्ट सच्चाइयों पर सचमुच विश्वास करने से रोके जो उसे परमेश्वर के राज्य में सामर्थी और प्रभावी बना सकती हैं। परन्तु एक अविश्वासी में इसकी योजना ऐसे की गई है कि उसे यीशु मसीह पर उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में विश्वास करने से रोके।

चूँकि **मात्र** अविश्वास ही वह पाप है जो एक व्यक्ति को नरक जाने के लिये दोषी ठहराता है, शैतान उसे **अमूल्य** मानता है, अन्य गढ़ों के साथ उसकी रक्षा करता है। वह किसी भी ऐसी मनोवृत्ति का उपयोग कर लेता है जो परमेश्वर की इच्छा और वचन के विरुद्ध है। जब वह धनी नवयुवक यीशु के पास यह पूछते हुये आया कि वह अनन्त जीवन कैसे पा सकता है तो यीशु ने उसे यह **कभी नहीं** बताया कि वह उद्धार कैसे पा सकता है। बल्कि, उसने उसे अपनी संपत्ति कंगालों को बाँट देने कहा।

परन्तु वह युवक ऐसा नहीं करना चाहता था, और जैसा आया था वैसा ही – खोया हुआ – चला गया। यीशु जानता था कि **लालच** उसके मन और हृदय को नियंत्रित किये हुये था और उसे उद्धार पाने से रोके हुये था, और जब तक वह नहीं टूटेगा, सुसमाचार प्रभावहीन होगा (मरकुस 10)।

सूखार की उस सामरी स्त्री का गढ़ **वासना** थी। वह अपने जीवन के प्रमुख विषय से बचकर प्रभु से सामाजिक और ऐतिहासिक विषय पर बात कर रही थी। परन्तु जब यीशु ने स्पष्टता से उसे बता दिया कि उसने पाँच बार विवाह किया था और वह वर्तमान में एक ऐसे पुरुष के साथ रह रही थी जो उसका पति नहीं था – उसने उसका ध्यान खींच लिया। इस मामले में वह गढ़ ध्वस्त कर दिया गया और वह अद्भुत रीति से बच गई (यूहन्ना 4)।

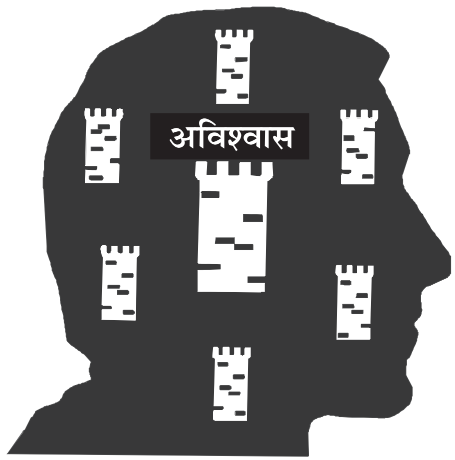

शैतान बहुधा परमेश्वर के प्रेम के सत्य को रोकने और उसे ग्रहण किये जाने में बाधा डालने के लिये **कड़वाहट** का उपयोग करता है। उदाहरण के लिये, एक छोटी लड़की का यौन-शोषण किया गया है, और अब वर्षों बाद कोई उसे सुसमाचार सुनाता है – वह उसके हृदय की कड़वाहट को कभी पार नहीं कर पायेगा। इसके पहले कि वह परमेश्वर के प्रेम के इस सुसमाचार को ग्रहण करे, उस गढ़ को प्रार्थना के द्वारा गिराया जाना अनिवार्य है।

समलैंगिको को मसीह के लिये जीतना कठिन है – इसलिये नहीं कि परमेश्वर उनसे प्रेम नहीं करता या सुसमाचार उतना सामर्थी नहीं है या आप उनकी पर्याप्त चिन्ता नही करते हैं। परन्तु यह इतना मजबूत गढ़ है कि इसे तोड़ने के लिये अत्यधिक प्रार्थना, उपवास, दृढ़ता, विश्वास इत्यादि की

आवश्यकता है। और प्रायः हम निराश हो जाते हैं और विजय मिलने के पहले ही छोड़ देते हैं।

एक दिन मैं एक विशेष व्यक्ति के लिये प्रार्थना कर रहा था, मैंने प्रभु से विनती की कि मुझ पर प्रकट करे कि वह सुसामाचार का लगातार तिरस्कार क्यों कर रहा था। उसने मेरे मन में एक शब्द डाला "नियंत्रण"। मैं सचमुच नहीं समझा कि उसका अर्थ क्या था। परन्तु मैं जैसे-जैसे उस व्यक्ति को बेहतर जानता गया, मैंने पाया कि वह अपने प्रभाव-क्षेत्र की सभी बातों को सख्ती से नियंत्रित करता था। अब मैं समझता हूँ कि नियंत्रण क्यों वह गढ़ है जो उसे मसीह से दूर रखता है - क्योंकि उद्धार पाने के लिये अवश्य है कि वह व्याक्ति प्रभु के प्रति समर्पित हो!

यद्यपि इस पुस्तक का विषय हमें गढ़ों का गहरा अध्ययन करने की अनुमति नहीं देता है, मैं उनसे संक्षिप्त में बात करना चाहूँगा जो नशीली वस्तुएँ या मदिरा जैसे प्रमुख व्यसनवाले किसी व्यक्ति के लिये प्रार्थना कर रहे होंगे। ये व्यसन वास्तविक समस्या को मात्र छिपाते हैं। प्रायः वास्तविक समस्या क्षतिग्रस्त अहम होती है जहाँ अहंकार और व्यक्तित्व किसी न किसी प्रकार से - या तो तिरस्कार, दुर्व्यवहार या जीवन में आई किसी प्रमुख विफलता से - चोट खाया है। व्यसन स्वयं मात्र इस समस्या को ढाँपता है और उससे जुड़ जाता है। इसलिये आप प्रभु से प्रार्थना कीजिये कि आपको समस्या की जड़ दिखाये ताकि आप विजय प्राप्त कर सकें।

जब एडि स्मिथ को यह जानने की आवश्यकता हुई कि किसी विशेष परामर्श-खोजी की सहायता कैसे करनी है तो उन्होंने परमेश्वर से माँगा कि उन पर प्रकट करे कि उस स्त्री की स्थिति के विषय में उन्हें क्या जानने की आवश्यकता है। प्रभु ने एडि के हृदय में डाला कि उससे 'देशी पश्चिमी नृत्य' के विषय में पूछे। जब उन्होंने पूछा, वह तत्काल आँसुओं में डूबकर चीख उठी, "आपको इसके विषय में किसने बताया?" तब उसने अपनी कहानी बताई कि पन्द्रह वर्ष की उम्र में वह अनिच्छा से अपने मित्र के साथ देशी पाश्चात्य नृत्य में गई। वहाँ उसने अपने संडे-स्कूल शिक्षक को नशे की हालत में लड़खड़ाते देखा। वहाँ, उसी क्षण उसने परमेश्वर की ओर अपनी पीठ फेरकर उससे कहा, "यदि मसीहत में यही सब कुछ है, तो उसे अपने पास ही रखिये।" तब उसने एडि को बताया, "तब से मेरा जीवन जीता-जागता नरक बन गया है। मैं मदिरा एवं अवैध नशीली वस्तुओं के व्यसन में निराशाजनक रीति से फँस चुकी हूँ। मैंने कई विवाह किये और मैं पूर्णतः दुःखी हूँ।" उसकी समस्या की जड़ को जानने से एडि उसके लिये प्रार्थना करने में सक्षम हुये और परमेश्वर ने उसे स्वतन्त्र किया (स्मिथ 71-73)।

मैं कल्पना करता हूँ कि अविश्वास की रक्षा के लिये शैतान सैकड़ों गढ़ों का उपयोग करता है परन्तु हमें एक मूलभूत सत्य समझना अवश्य है कि उद्धार न पाये हुये प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में हमेशा **एक ही प्रमुख गढ़** होता है जो उसे सुसमाचार को स्वीकार करने से रोकता है। युद्ध **कभी भी** अनेक पापों के ऊपर नहीं (यद्यपि एक व्यक्ति के अनेक हो सकते हैं) परन्तु मात्र **एक** के ऊपर लड़ा जाता है!! वह

विशिष्ट गढ़ ही खास कवच है जिस पर बलवन्त मनुष्य निर्भर होता है, परन्तु जब उसका कवच (गढ़) ध्वस्त किया जाता है, वह हार जाता है और व्यक्ति उद्धार के लिये तैयार हो जाता है (लूका 11:21-22)।

आत्मिक युद्ध में आत्माओं को जीतने के पक्ष में जो एक और पूर्णतः अनिवार्य तत्व है वह मसीह में **अपने अधिकार का प्रयोग करना** है। उसने हमे अपना असीम अधिकार दिया है (मत्ती 16:19)। परन्तु अवश्य है कि हम उसका उपयोग करें। "जैसे सड़क के कोने में खड़ा पुलिस अपने अधिकार के कारण यातायात को संचालित कर सकता है, वैसे ही एक विश्वासी शैतान के कारण बन्दी एवं अन्धे बनाये गये मनुष्यों की आत्माओं के लिये प्रार्थना कर सकता है और उनके छुटकारे का कारण बन सकता है। अंधकार की शक्तियाँ अपनी सामर्थ्य को यीशु मसीह के लहू के द्वारा टूटा हुआ पाती हैं, और जब हम प्रभु में अपने अधिकार का उपयोग करते हैं तब वे हमारा सामना नहीं कर सकतीं। परमेश्वर ने हमें वे साधन बनने बुलाया है जिसके द्वारा वह अपने अधिकार का उपयोग कर सके। आइये हम विश्वास से इस स्थान को ग्रहण करें और विरोध की चिन्ता किये बिना स्थिर रहें। तब वह हमारे द्वारा ऐसे काम कर सकेगा जिन्हें हमने स्वप्न में भी नहीं सोचा था" (एप्प 108-10)।

वैधानिक रूप से सभी आत्मायें मसीह की हैं क्योंकि उसने कलवरी पर उनके पापों का मूल्य चुका दिया है (1 यूहन्ना 2:2)। परन्तु शैतान उन्हें अवैधानिक रीति से और बलपूर्वक अपना बन्दी बनाये रखता है, और दृढ़ संकल्प से उन्हें जाने देने से इनकार करता है। और वह उन्हें आत्मिक अंधकार में तब तक बाँधे रहेगा जब तक कि हम अपना अधिकार-पूर्ण स्थान नहीं ले लेते और मसीह के द्वारा बहाये गये लहू और उसके द्वारा हमें दिये गये अधिकार के आधार पर अपने सिंहासन-अधिकारों का उपयोग करते हुये उनके तत्काल छुटकारे की माँग नहीं करते।

ऐसा कोई कारण नहीं है कि कोई **एक भी आत्मा** मरे और नरक में जाये क्योंकि मसीह ने पहले ही उनके छुटकारे का मूल्य चुका दिया है। और किसी का नरक में जाने का **मात्र एक** ही कारण है कि हमने अपने अधिकार का स्थान **नहीं** लिया और उनके उद्धार के लिये दबाव डालते हुये बलवन्त मनुष्य को नहीं बाँधा। शैतान उन्हें नहीं छोड़ेगा जब तक कि हम उसे ऐसा करने के लिये विवश नहीं करेंगे।

जनरल जोनाथन वैनराइट अन्य युद्धबन्दी मित्रों के साथ फारमोसा द्वीप पर बन्दी बनाये गये थे। यद्यपि युद्ध समाप्त हो चुका था और जापानी कमाण्डेंट इसे जानता था तौभी उसने न ही अपने बन्दियों को यह बताया और न ही उन्हें स्वतन्त्र किया। परन्तु शीघ्र ही मित्र सेनाओं का एक वायुयान वह समाचार लेकर उस द्वीप पर उतरा। तब जनरल वैनराइट ने जापानी कमाण्डेंट को यह घोषणा की, "मेरे प्रधान सेनापति ने तुम्हारे प्रधान सेनापति को पराजित कर दिया है। अब मैं प्रभारी हूँ।" और हम भी उस बलवन्त को (व्यक्ति के जीवन में स्थित प्रमुख दुष्ट आत्मा को) घोषणा करके यही करते है, "मेरे प्रधान सेनापति ने तुम्हारे प्रधान सेनापति को हरा दिया है। मैं इस अवैधानिक बन्दी के छुटकारे की माँग करता हूँ।" और यदि हम **दबाव डालेंगे** तो छुटकारा और बचाव **पूरा होगा**!!!

आत्माओं के लिये प्रार्थना में अंतिम परन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व शैतान का लगातार सामना करना है। हमें परमेश्वर के हथियारों को पहनने का (इफिसियों 6:10-18) निर्देश दिया गया है ताकि "शैतान की युक्तियों (पद्धतियों) के सामने खड़े रह सको . . . कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके **स्थिर रह** सको (सामना कर सको)।" जब हम सचमुच आत्माओं के उद्धार के लिये गंभीर हो जाते हैं, तब शैतान, इस प्रयास में कि हम पीछे हट जायें और छोड़ दें, हमारे जीवन में या उनके जीवन में जिनके लिये हम प्रार्थना कर रहे हैं कठिन परिस्थितियों का उपयोग करता है। यही कारण है कि एक पति या किशोर/किशोरी जिसके लिये एक पत्नी या माँ प्रार्थना कर रही होती है, बहुधा अच्छे बनने के स्थान पर और बिगड़ते जाते हैं - शैतान चाहता है कि वे प्रार्थना करना छोड़ दें क्योंकि उन आत्माओं पर उसकी पकड़ ढीली पड़ रही होती है!!

इसलिये शैतान का सामना करने का अर्थ यह है कि आप नकारात्मक प्रतिक्रियायें, परिस्थितियाँ इत्यादि को अपने नियमित सरगर्म प्रार्थना के प्रयास को बन्द नहीं करने देते। जब कुछ, जैसे कि एस्बेटस, अग्नि रोधक है उसका अर्थ यह होता है कि उसके ऊपर आग का प्रभाव नही होता है, शैतान-रोधक होने का अर्थ यह हुआ कि शैतान का आप पर कोई प्रभाव नही पड़ता, आप बस अपने खोये हुये प्रिय जन के उद्धार के लिये प्रार्थना करते रहते हैं।

एक आत्मा के लिये शैतान का सामना करने की सर्वाधिक विस्मयकारी गवाही नीचे दी जा रही है जो चार्ल्स ब्लैन्कार्ड ने सुनी थी, जो 43 वर्षों तक व्हीटन कॉलेज के प्रेसीडेन्ट थे। उन्होंने उसकी जाँच-पड़ताल करके उसे सत्य पाया और अपनी पुस्तक 'गेटींग थींग्ज् फ्राम गॉड' में नीचे दिये गये शब्दों में लिपिबद्ध किया:

"मित्रों, लगभग ढाई या तीन वर्ष पूर्व मैं फिलाडेलफिया के एक अस्पताल में था। मैं पेनसिलवेनिया में एक इंजीनियर था और यद्यपि मेरी पत्नी प्रार्थना करने वाली थी, मैं अपने जीवन भर पापी मनुष्य था। इस समय मैं बहुत बीमार था और निर्जीव-सा हो गया था। मेरा वजन एक सौ पाउण्ड से भी कम रह गया था।

अंत में जो चिकित्सक मेरा इलाज कर रहा था उसने मेरी पत्नी से कहा कि मैं मर चुका हूँ, परन्तु उसने कहा, "नहीं, वे नहीं मरे हैं। वह मर नहीं सकते हैं। मैंने उनके लिये **सत्ताईस वर्षों** से प्रार्थना की है और परमेश्वर ने **मुझ से प्रतिज्ञा की** है कि वे उद्धार पायेंगे। क्या आप सोचते हैं कि मेरे सत्ताईस वर्ष तक प्रार्थना करने और परमेश्वर के **प्रतिज्ञा देने** के बाद परमेश्वर उन्हें मरने देगा जबकि वे उद्धार नहीं पाये हैं?" चिकित्सक ने कहा "खैर! मैं उस विषय पर कुछ नहीं जानता परन्तु मैं यह जानता हूँ कि वह मर चुका है।" और मेरी पलंग के चारों ओर परदा कर दिया गया जो अस्पताल में जीवतों और मृतकों के बीच विभाजन करता है।

मेरी पत्नी के संतोष के लिये, एक के बाद एक चिकित्सक बुलाये गये जब तक कि **सात** मेरे बिस्तर के चारों ओर नहीं हो गये और उनमें से प्रत्येक जैसे-जैसे आता गया परीक्षण करके अपने पहले के चिकित्सक की रिपोर्ट को सही ठहराता गया। सात

चिकित्सकों ने कह दिया कि मैं मर गया था। इसी बीच, मेरी पत्नी मेरे पलंग के पास घुटनों पर यही कहती रही कि मैं मरा नहीं था - यदि मैं मर भी गया तो परमेश्वर मुझे वापस जीवित करेगा क्योंकि उसने उससे प्रतिज्ञा की थी कि मैं उद्धार पाऊँगा और मैं तब तक उद्धार नहीं पाया था। तब तक अस्पताल के कड़े फर्श पर घुटनें टेके रहने के कारण उसके घुटनें दु:खने लगे। उसने नर्स से एक तकिया माँगी और नर्स ने उसे तकिया लाकर दी जिस पर उसने पुन: घुटनें टेक लिये।

एक घंटा, दो घंटा और तीन घंटे निकल गये। पलंग के बाजू से वह परदा लगा रहा। मैं वहाँ पर स्पष्ट रूप से मृत पड़ा था। चार घंटे, पाँच घंटे, छ: घंटे, सात घंटे, **तेरह घंटे** बीत गये और इस पूरे समय में मेरी पत्नी पलंग के बगल में घुटने टेके रही और जब लोगों ने विरोध किया और उसे चले जाने के लिये समझाया तो उसने कहा, "नहीं, उन्हें उद्धार पाना ही है। यदि वे मर भी गये हैं तो परमेश्वर उन्हें जीवन वापस देगा। वे मरे नहीं हैं। वह तब तक नहीं मर सकते जब तक कि उद्धार न पा जायें।"

तेरहवे घंटे के बीतते-बीतते मैंने अपनी आँखे खोलीं और उसने कहा, "प्रिय, आपकी क्या इच्छा है?" और मैंने कहा, "मैं घर जाना चाहता हूँ" और उसने कहा, "आप अवश्य घर चलोगे।" परन्तु जब उसने यह प्रस्ताव रखा तो चिकित्सकों ने भय से अपने हाथ खड़े कर दिये। उन्होंने कहा, "क्यों, इससे वह मर जायेगा। यह आत्महत्या होगी।" उसने कहा, "आपने अपनी बारी पूरी कर ली है। आपने पहले ही कहा था कि वह मर चुके हैं। मैं उन्हें घर ले जा रही हूँ।"

आज मेरा वजन 246 पाउण्ड है। मैं आज भी पेनसिलवेनिया लाईन पर तेज ट्रेन चलाता हूँ। मैं लोगों को यह बताने के लिये कि यीशु आपके लिये क्या कर सकता है छोटे अवकाश पर मिनियापोलिस गया था, और यीशु क्या कर सकता है यह आपको बताते हुये मुझे प्रसन्नता होती है" (ब्लैन्कार्ड 94-95)।

आत्माओं के उद्धार के लिये की गई किसी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिलेगा इसके मात्र **दो कारण** हैं: या तो प्रार्थना करने वाले के जीवन में पाप अथवा अविश्वास है या फिर शैतान उत्तर आने में रुकावट डाल रहा है। इसलिये यदि आप अपने जीवन को ठीक कर लेते हैं (यूहन्ना 15:7) और निरन्तर प्रार्थना करते हैं तो उत्तर आयेगा, क्योंकि युद्ध-स्तर पर की गई साहसी और सरगर्म प्रार्थना के विरुद्ध शैतान अधिक समय तक नहीं ठहर सकता!!

अब, किसी भी युद्ध में, अवश्य है कि योजनायें बनाई जायें। सैनिक यूँही यहाँ-वहाँ भटककर किसी पर भी गोली नहीं चलाते हैं। आत्माओं के लिये प्रार्थना के युद्ध में भी यही सच है - हमें एक रणनीति की आवश्यकता होती है। मुझे कई ऐसी रणनीतियाँ देने दीजिये जो बहुत प्रभावी हैं।

पूरी कलीसिया के लिये **मूलभूत** रणनीति यह है कि वह अपने आप को नियमित प्रार्थना में समर्पित कर दे। प्रारंभिक कलीसिया ने ऐसा ही किया: "ये सब . . . एक चित होकर प्रार्थना में लगे रहे" (प्रेरितों के काम 1:14) और आश्चर्यजनक परिणाम

मिले कि "उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गये" (प्रेरितों के काम 2:41) और "वचन के सुनने वालों में से बहुतों ने विश्वास किया और उनकी गिनती **पाँच हजार** पुरुषों के लगभग हो गई" (प्रेरितों के काम 4:4)।

एक और प्रार्थना सभा में, "जब वे प्रार्थना कर चुके तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे" (प्रेरितों के काम 4:31) और अनेक आत्माओं: "पुरुष और स्त्रियाँ . . .**बड़ी संख्या** में"(प्रेरितों के काम 5:14) की फसल लगातार काटने के साथ, "यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई" (प्रेरितों के काम 6:7) और "तब लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले . . . प्रभु की ओर फिरे" (प्रेरितों के काम 9:35)। प्रेरितों के काम में इसी प्रकार का वर्णन करने वाले और अनेक स्थान हैं। यदि आज की कलीसिया प्रारंभिक कलीसिया के प्रार्थना उदाहरण का अनुसरण करेगी तो वह उसी प्रकार के सुसमाचार-प्रचारीय परिणाम का अनुभव करेगी ।

एक और बहुत उत्पादक रणनीति **प्रार्थना समूहों** को बनाना है। अधिकतर कलीसियाओं में संडे-स्कूल की कक्षायें या 'होम सेल' (घरों में मिलने वाले छोटे गुट) आदर्श ढाँचा होगा क्योंकि वे पहले से ही नियमित रूप से मिलते रहते हैं। वे उद्धार न पाये हुओं की अपनी सूचियों को मिलाकर उनके लिये लगातार दृढ़ता से प्रार्थना कर सकते हैं जब तक कि वे उन्हें मसीह के पास आता हुआ न देख लें।

इविलिन क्रिस्टनस्न **तीन-तीन के गुट बनाकर प्रार्थना करने** का सुझाव यह कहकर देती हैं कि वह प्रचार-पूर्व प्रार्थना की सर्वाधिक प्रभावी परन्तु सरल पद्धतियों में से एक है। इसमें ऐसे तीन मसीही एकत्र होते हैं जो उद्धार न पाये हुये नौ व्यक्तियों के लिये प्रति-सप्ताह प्रार्थना करने हेतु अपने आप को अनुशासित करने तैयार हैं। वह वर्णन करती है कि इस प्रकार की प्रार्थना इंग्लैण्ड में बिली ग्राहम के दो क्रूसेड के समय में अत्यधिक फलदायी हुई थी। "तीन-तीन के गुट ने बिली ग्राहम के 1984 मिशन इंग्लैण्ड के समय बहुत व्यापक परिणाम दिये, जहाँ इंग्लैण्ड के 90,000 मसीहियों ने **क्रूसेड पूर्व प्रार्थना** करने के लिये तीन-तीन के गुट बनाये। तीन मसीहियों में से प्रत्येक ने तीन अ-मसीहियों का चुनाव किया और सुसमाचार क्रूसेड के एक वर्ष पूर्व से सप्ताह में एक बार एकत्र होकर उन नौ लोगों के लिये नाम लेकर प्रार्थना की कि वे यीशु को पा जायें। जनवरी 1989 के "डिसिश्जन" पत्रिका ने, बिली के 1989 मिशन इंग्लैण्ड द्वितीय के लिये तीन-तीन के गुट बनाने का उत्साहवर्धन करते हुये, रिपोर्ट दी कि अनेक तीन-तीन के प्रार्थना गुटों ने उन नौ लोगों को, जिनके लिये वे प्रार्थना कर रहे थे,**बिली के वहाँ आने के पहले ही** यीशु को ग्रहण करते हुये देखा! 7000 से भी अधिक कलीसियाओं में से प्रत्येक में बिली के मिशन इंग्लैण्ड 89 के लिये बहुत-से तीन-तीन के गुट थे, और परिणाम धरती को हिला देने वाले थे। पूरे देश में आत्माओं के लिये शैतान से युद्ध करने का क्या सामर्थी तरीका था!" (क्रिसटेनसन 110)।

आत्माओं को बचाने के लिये प्रार्थना करने की एक और उत्पादक रणनीति **प्रार्थना सहयोगी** है। एक बड़े समूह को एकत्र करने की अपेक्षा दो व्यक्तियों को

एक साथ लाना सरल है। एक पति-पत्नी का दल सबसे अच्छा है क्योंकि सामान्यत: वे प्रतिदिन एक साथ रहते हैं। इसके साथ ही रिश्तेदारों, मित्रों, पड़ोसियों इत्यादि के लिये उनका बोझ भी समान ही होगा। परन्तु प्रार्थना सहयोगी का कोई भी जोड़ा कार्य कर सकता है। यीशु ने इस बात की गारंटी भी दी है कि उनकी प्रार्थना का उत्तर मिलेगा (मत्ती 18:19)।

मैं एक अंतिम रणनीति का उल्लेख करूँगा जो अकेले व्यक्ति के प्रार्थना करने में भी अच्छी काम आती है - प्रार्थना **सूची**!! हजारों अन्य लोगों के साथ मैंने भी वर्षों तक प्रार्थना सूची का उपयोग किया है, और उस विधि के द्वारा अनेक आत्माओं को मसीह के पास आते देखा है। मैं आपको एक कहानी बताऊँगा जिससे मुझे आशीष मिली, वहीं आशा मैं आपके लिये भी करता हूँ:

"कुछ वर्ष पहले इलेनोई प्रांत के स्प्रिंगफील्ड नामक स्थान में एक उत्साही व्यक्ति ने अपने साथ एक प्रार्थना दल एकत्र किया और उन्हें यह सुझाव दिया: 'आज की संध्या जब आप घर पहुँचेंगे तो स्प्रिंगफील्ड के उन सभी लोगों के नाम लिख लीजिये जिन्हें आप चाहते हैं कि उद्धार पायें, और तब उनके लिये उनका नाम लेकर दिन में तीन बार प्रार्थना कीजिये कि वे उद्धार पायें। तब वे लोग उद्धार पाने के लिये परमेश्वर की ओर फिरें इसलिये अपना यथासंभव सर्वोत्तम प्रयास कीजिये।'

उस समय स्प्रिंगफील्ड में एक अपंग महिला रहती थी जो शारीरिक रूप से लगभग पूर्णत: असहाय थी। वह सत्रह वर्षों से बिस्तर पर पड़ी थी। वह बहुत लम्बे समय से परमेश्वर से सामान्य रूप में बड़ी संख्या में आत्माओं को बचाने के लिये प्रार्थना कर रही थी। जब उसके परिवार ने उसे प्रार्थना दल को दिये गये सुझाव के विषय में बताया तो उसने कहा: 'यह ऐसा कुछ है जो मैं भी कर सकती हूँ।' वह अपने दाहिने हाथ का उपयोग कर सकती थी। उसके पलंग से लगी एक लिखने की मेज थी जिसे काम के अनुकूल लगाया जा सकता था। उसने कलम और कागज की माँग की। उसने सत्तावन परिचितों के नाम लिखे। उसने इनमें से प्रत्येक के लिये नाम लेकर दिन में तीन बार प्रार्थना की। उसने इन्हें यह बताते हुये पत्र लिखे कि उसे उनमें रुचि थी। उसने उन मसीही मित्रों को भी पत्र लिखे जिन्हें वह जानती थी कि उनमें इन लोगों का भरोसा था। और उन्हें इनकी आत्माओं के कल्याण के विषय में बात करने और पश्चाताप और विश्वास करने हेतु मनवाने का प्रयास करने का निवेदन किया। उसको परमेश्वर पर संदेह-रहित विश्वास था। उस पर अपने नम्र और गंभीर भरोसे के कारण उसने इस प्रकार खोये हुओं के लिये मध्यस्थता की। समय के साथ-साथ उन सत्तावन में से प्रत्येक ने यीशु मसीह पर विश्वास करके उसे अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया" (मैक्लैरे 124-125)।

अध्याय ६

व्यक्तिगत गवाहियाँ

मैंने 2002 के मई माह में लुईसियाना प्रांत के फारमरविले के क्रेस्टव्यू बैपटिस्ट चर्च में इस सामग्री का अध्ययन कराया था। वहाँ के पास्टर भाई वेयने व्हाइटसाइड ने मुझे पत्र में लिखा, "हमने लोगों के जीवन से मज़बूत गढ़ों को टूटकर अलग होते देखा हैं . . . जो सामग्री आपने यहाँ सिखाई है उसने उन लोगों के जीवन में एक क्रांति आरंभ कर दी है जो खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने के परमेश्वर के सिद्धान्तों को प्रयोग में ला रहे हैं।"

वेयने के हृदय में मृत्यु-दण्ड की सजा पाये बन्दियों के लिये ईश्वर-प्रदत्त बोझ है और वे उन्हें मसीह के लिये जीतने के प्रयास में बन्दीगृह में बहुत समय बिताते हैं। वे अपनी कहानी चालू रखते हैं: "प्रमुख विजय में टेक्सस् के हडसनविले बन्दीगृह में मृत्यु-दण्ड की प्रतीक्षा करते एक बन्दी की कहानी है जिसे हाल ही में फाँसी दी गई। वह एक अति-समर्पित मुसलमान था। मैं जितने मसीहियों को जानता हूँ उनमें से अधिकतर से वह नैतिक रूप से बेहतर था। मैं लगभग दो वर्षो से उसके संपर्क में था, उसको सुसमाचार सुनाया करता और अपनी कलीसिया को उसके लिये प्रार्थना में लगाया था - सब कुछ व्यर्थ गया। वह मुझे पत्र लिखता तो उसे इन शब्दों से समाप्त करता, "अल्लाह आपके साथ हो।" मैंने कभी किसी अन्य मामले में इससे अधिक निराशा और असहायता अनुभव नहीं की थी।

तब, उसे मृत्यु-दण्ड दिये जाने की सितम्बर 2002 की तारीख के लगभग दो माह पहले, मैंने अपनी कलीसिया को झूठे धर्म के बलवन्त मनुष्य को बाँधने की और उसके लिये प्रार्थना में मसीह के लहू का सहारा लेकर गिड़गिड़ाने के लिये उत्साहित किया। तत्काल एक परिवर्तन आरंभ हुआ। उसने स्वीकार करना आरंभ किया कि यीशु एक अच्छा गुरु था और उसके पत्र अब "परमेश्वर आपके साथ हो" इन शब्दों से समाप्त होने लगे।

उसने मुझे अपनी फाँसी के समय उपस्थित रहने का निमंत्रण दिया। मैं उसे अंतिम बार देखने के लिये हडसनविले गया। मेरा हृदय अत्यधिक रोमांचित हो गया जब उसने मुझसे पूछा, 'उद्धार हेतु मसीह पर विश्वास करने के लिये मुझे क्या करना होगा?' दोपहर 3:05 पर उसने प्रभु यीशु से प्रार्थना की कि उसका उद्धार करे। 51 घंटे 12 मिनट बाद वह मर चुका था। फाँसी दी जाने के मात्र दो घंटे पहले उसने मुझे आँख मारकर कहा, 'मैं आपसे प्रेम करता हूँ और स्वर्ग में आपकी प्रतीक्षा करता रहूँगा।' इस पृथ्वी पर उसके अंतिम शब्द यह थे, 'परमेश्वर क्षमा करता है। वह सबसे महान है।' वह चेहरे पर इतनी शांति लिये मरा कि वार्डन ने भी इस बात पर टिप्पणी की।

इस बन्दी को मसीह के लिये जीतने हेतु हमने यथासंभव जो भी प्रयास किये थे वे पूर्णत: व्यर्थ हो गये थे जब तक कि हमने उसके जीवन में कार्यरत झूठे धर्म के बलवन्त मनुष्य को बलपूर्वक पकड़ नहीं लिया और मसीह के लहू द्वारा बाँध नहीं दिया। तब हमने तत्काल बंधनों को टूटते देखा - बंधन यहाँ तक टूटते चले गये कि वह सुसमाचार के लिये खुल गया और उसने मुझसे पूछा कि वह उद्धार कैसे पा सकता है। वह आज स्वर्ग में है क्योंकि हमने खोये हुओं के लिये प्रार्थना करना सीख लिया है। विशेषकर बलवन्त मनुष्य को बाँध लेने के विषय में जैसे कि यीशु ने मरकुस 3:27 में कहा है। आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारी कलीसिया को स्वतन्त्र करने वाले सत्य की शिक्षा दी। परमेश्वर आपको अंत के दिनों की फसल में बहुत सफलता दे!"

जब हम किसी के उद्धार के लिये प्रार्थना करना आरंभ करते हैं तो लगता है कि परमेश्वर उस व्यक्ति के चारों ओर एक घेरा खींचता है और तब उस घेरे के भीतर उसके पास चला आता है। रिकी ग्रेशम के साथ भी ऐसा ही हुआ जब उसकी पत्नी हेलन और उसका पास्टर मिकी हडनाल उसके लिये प्रार्थना करने लगे। जो कहानी रिकी ने बताई वह इस प्रकार है: "1990 के फरवरी और मार्च माह की बात है जब मैंने अपने जीवन के कुछ सर्वाधिक बुरे दिन-रात बिताये। यद्यपि मैं उस समय नहीं समझा था तौभी परमेश्वर का पवित्र आत्मा मुझे मेरे पापों का बोध करा रहा था। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या हो रहा था परन्तु उन दो माह में मैं जहाँ भी गया मैंने कुछ ऐसा देखा या सुना जो परमेश्वर से संबंधित था। वह ऐसा था मानो प्रतिदिन जब मैं नींद से जागता तो परमेश्वर वहाँ था। जिन लोगों को मैं वर्षों से जानता था वे अब मुझे प्रभु के विषय में बता रहे थे। ऐसा लगता था मानो मैं कहीं भी छिप नहीं सकता!

मुझे विशेषकर एक दिन स्मरण आता है कि जब मेरा सबसे घनिष्ठ मित्र और मैं उसके ट्रक में सवार होकर जा रहे थे तभी उसके एक मित्र ने हमें सड़क के किनारे रोक लिया। यह व्यक्ति ट्रक के पास मेरी एक ओर आकर बातें करने लगा। बातचीत के मध्य वह मेरे मित्र से प्रभु के विषय में बातें करते हुये प्रभु को उद्धारकर्त्ता करके ग्रहण करने हेतु उत्साहित करने लगा। पुन: एक बार मुझे परमेश्वर की ओर से एक और वचन सुनना पड़ा। ऐसा लगा कि मैं कहीं नहीं छिप सकता। मैं बिना एक शब्द बोले ट्रक में बैठा रहा। एक ओर तो मैं और सुनना चाहता था, परन्तु दूसरी ओर मैं चाहता था कि मेरा मित्र गाड़ी आगे बढ़ाये। अंत में, कुछ समय, (पाँच मिनट) जो एक घंटे के समान लगा था, बाद वह चल पड़ा।

जैसे-जैसे दिन बीतते गये, दिन-प्रतिदिन, सर्वत्र, यहाँ तक कि कार्यस्थल पर भी, परमेश्वर ही दिखाई देने लगा। उन दिनों मैं एक मशीन की दुकान में स्वरोजगार-रत था। वहाँ एक हबशी सज्जन था जो कभी-कभी मुझसे बातें करने आता था। अपने घमण्ड के कारण मैं अपने किसी परिचित से प्रभु के विषय में नहीं पूछना चाहता था। अत: मैंने उससे प्रभु के विषय में पूछने का साहस बटोरा। यद्यपि मैं उसके उत्तर के लिये तैयार नहीं था - वह था!

उसने कहा, 'बस एक मिनट,' और ट्रक में जाकर एक ऐसी बाइबिल लेकर वापस आया जो सौ साल पुरानी दिखती थी। वह उस बाइबिल के पन्नों को पलट पलटकर मेरे

लिये वचनों को पढ़ने लगा। मैं सचमुच समझ नहीं पाया था कि वह क्या बोल रहा था। परन्तु आज मेरे साथ एक बात है जो मैं कभी भूल नहीं सका: 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।' उसने इस वाक्य को बार-बार और अनेक बार दोहराया - वह मेरे मन से कभी नहीं गया!

इस समयावधि में कोई बात मुझे परमेश्वर के वचन की ओर खींच रही थी। मैं इतना घमण्डी था कि किसी से बाइबिल नहीं माँग सकता था इसलिये मैंने विश्वकोश में 'ख्रीस्त' शब्द ढूँढ़ा, और वहाँ क्रूस पर लटके यीशु का चित्र था। कुछ तो था जो मुझे प्रभु के उस चित्र की ओर खींचता रहता था। **एक के बाद एक कई रातें मैं चुपके-चुपके जाकर उस चित्र को देखता रहता था।**

उसके बाद के कुछ सप्ताहों के दौरान मैं अपने आप को बदलने का प्रयास करने लगा। मैं अपने जीवन के उस बिन्दु पर आ गया था जहाँ मैं अपशब्द बोलने से अपने आप को रोक ही नहीं सकता था - प्रत्येक दूसरा शब्द अपशब्द होता था। मैं बड़ी व्याकुलता से इसे बन्द करना चाहता था परन्तु ऐसा लगता था कि मानो मैं इसे नियंत्रित नहीं कर सकता था - वह मुझे नियंत्रित करता था।

अंत में, एक दिन जब मैं काम पर अकेला था, मैं परमेश्वर से इस प्रकार बोल पड़ा, 'प्रभु मैं अब इसे और अधिक नहीं सह सकता, परमेश्वर मेरी सहायता कर। यीशु ने मेरे लिये क्रूस पर जो सब कुछ किया वह मैं नहीं समझता हूँ परन्तु मुझे समझा और मैं तेरा अनुसरण करूँगा।' और उस दिन से मेरे भीतर कुछ बदल गया। मैंने न मात्र अपशब्द बोलना छोड़ दिया, वरन् मेरे भीतर से वह इच्छा ही समाप्त हो गई - ऐसा लगता था कि मानो वह भाषा मुझमें कभी थी ही नहीं।

मेरे भीतर जो कुछ हो रहा था उसे मुझे किसी को बताना था इसलिये मैंने पास्टर से कलीसिया के सामने कुछ कहने की अनुमति माँगी। जो कुछ मैं कहना जानता था वह यह कि परमेश्वर ने मुझे प्रभु यीशु से प्रेम करने के और अपने जीवन के बाकी सभी दिनों में उसका अनुसरण करने की इच्छा रखने के स्थान पर लाया था।

अपने पापों का बोध होने के उन दो माह के समय में जो बात मैं नहीं जानता था वह यह थी कि मेरी पत्नी और उसके पास्टर ने स्वयं को वचनबद्ध किया था कि मेरे उद्धार के लिये प्रतिदिन प्रार्थना करेंगे - मैं जो अनुभव कर रहा था वह यह था कि परमेश्वर उन प्रार्थनाओं का उत्तर दे रहा था। अब मैं जानता हूँ कि मैं एक निष्ठावान प्रार्थना का फल था और यदि आप कभी उस स्थान पर रहे हैं तो आप जानते हैं कि मेरा अर्थ क्या है! आज मैं एक कलीसिया का पास्टर हूँ और मैं लगातार परमेश्वर के अनुग्रह का अधिक और अधिक अनुभव कर रहा हूँ।"

जब हम परमेश्वर से किसी व्यक्ति के उद्धार के लिये प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर को उसे अपने पास लाने के लिये जो कुछ करना है, उसके लिये हमें तैयार होना चाहिये। वेसली डूवेल कहते हैं, "बहुत-सी प्रार्थनाओं के उत्तर कुछ-एक व्यक्तियों की इच्छा का परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पण माँगते हैं। परमेश्वर लोगों को शतरंज के मोहरों के समान इधर से उधर नहीं घसीटता है। वह अनेक **प्रभावों और दबावों** के द्वारा, जो

वह लोगों पर लाता है, विश्वास उत्पन्न करता है" (डूवेल 262)। तथापि दबाव बहुत अधिक हो सकता है! टोनी फोन्टेनाट के मामले में यही हुआ: "मैं एक मसीही परिवार में अनेक प्रार्थना योद्धाओं के मध्य, जिनमें मेरी माँ, दादी-नानी, चाचा-मामा और मौसियाँ तथा फूफियाँ थीं, पैदा हुआ था। यद्यपि वे मेरे लिये अनेक वर्षों से प्रार्थना कर रहे थे तौभी मैं अपनी ही इच्छानुसार करता रहा। परन्तु जब परमेश्वर हम से व्यवहार करना चाहता है और हम फिर भी अपनी ही इच्छा से कार्य करते रहते हैं, वह ऐसी बातें हमारे साथ होने देता है जो अत्यधिक मानसिक आघात पहुँचा सकती हैं। और मैं आपको निश्चय दिला सकता हूँ कि **वह हमारा ध्यान खींच ही लेगा!!!**

परमेश्वर ने 22 मई 1982 को मेरा ध्यान खींच लिया। मैं अभी-अभी सोयाबिन के खेतों में रासायनिक दवाई का छिड़काव समाप्त करके अपने अड्डे की ओर वापसी उड़ान भर रहा था कि मेरा हवाई जहाज पेड़ों से भरे सुनसान इलाके में गिर गया और उसमें आग लग गई। मैं भी आग से जल रहा था!! आग बुझाने के लिये मैदान पर लुढ़कने के बाद मैं उठा और देखा कि मेरी कमीज़ पूरी जल चुकी थी और मेरी भुजा की चमड़ी मेरी उँगलियों पर लटक रही थी और मकड़ी के जाले के समान दिख रही थी। मेरी दाहिनी आँख में ज्योति नहीं थी और मेरे शरीर से तरल द्रव्य निकल रहा था - मैं जान गया था कि मैं समस्या में था।

मैं सहायता के लिये चीखने लगा परन्तु वहाँ मुझे सुनने वाला कोई नहीं था। मैं तब तक दौड़ता गया जब तक कि इतना निर्बल नहीं हो गया कि आगे न बढ़ सकूँ। मैं एक पेड़ के नीचे लेट गया और यही वह समय है जब मैंने प्रार्थना करना आरंभ किया। मैंने परमेश्वर से माँगा कि ऐसा होने दे कि कोई मुझे ढूँढ़ निकाले और मुझे मरने न दे। अचानक बातें घटने लगी; ऐसा लगा जैसे कोई नीचे उतर आया और मुझे उठा लिया और मेरे शरीर में उर्जा दौड़ने लगी। मैंने नयी शक्ति के साथ दौड़ना आरंभ किया और अंततः एक माल ढोने वाले ट्रक को रोक लिया। मैं सहायता के लिये पुकारते हुये ट्रक तक पहुँचा। एक पुरुष ने, जो किसी उपकरण पर काम कर रहा था, सिर उठाकर मेरी ओर देखा और मेरी दशा को देखकर मुझे तत्काल अस्पताल ले गया। तब मैं वहाँ से टैक्सस के गोवस्टन में स्थित जॉन सियेली बर्न सेन्टर ले जाया गया। वहाँ मैंने अगले दो माह गहन चिकित्सा कक्ष में बिताये।

अन्ततः, इस विनाशक अग्नि-परीक्षा के द्वारा, परमेश्वर ने मेरा ध्यान खींच लिया। नवम्बर 1982 में ब्रदर ली थामस ने इंडियन विलेज बैपटिस्ट चर्च में आकर पुनःजागृति क्रूसेड में प्रचार किया। इस दौरान उन्होंने मुझे सुसमाचार सुनाया और मैंने अपने उद्धार के लिये मसीह पर विश्वास किया। उन्होंने मुझसे कहा, "टोनी, यह वायुयान दुर्घटना तुम्हारे जीवन की सबसे महान घटना होगी क्योंकि इसके द्वारा तुमने प्रभु को पा लिया।" मैं उनसे सहमत था!!"

ओसवाल्ड चैम्बर्स कहते हैं, "जब हम दूसरों के लिये प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर का आत्मा उनके उस अचेतन क्षेत्र में कार्य करता है जिसके विषय में हम कुछ भी नहीं जानते और हम जिनके लिये प्रार्थना करते रहे हैं वे भी कुछ नहीं जानते। परन्तु समय बीतने के साथ-साथ जिसके लिये प्रार्थना की गई है उसका चेतन जीवन अशांति और बेचैनी

के चिन्ह दिखाना आरंभ करता है . . .। इस प्रकार की मध्यस्थी की प्रार्थना शैतान के राज्य को सर्वाधिक नुकसान पहुँचाती है। अपनी **आरंभिक अवस्था** में वह इतना हल्का, इतना क्षीण होता है कि यदि कारण को पवित्र आत्मा की ज्योति से मिलाया न जाये तो हम कभी उसके अनुसार नही चलेंगे" (चैम्बर्स 102–03)। जेकब विलियम की यही परिस्थिति थी। यद्यपि अपने पापों का बोध उसे लम्बे समय तक रहा तथापि जब उसके परिवार और मित्रों के मध्य उसके उद्धार के लिये बोझ की प्रार्थना बढ़ गई तभी उद्धार आया । उसकी कहानी यहाँ दी जा रही है। "मैं अपनी प्रारंभिक किशोरावस्था में था जब हम वेस्टवुड बैपटिस्ट चर्च चले गये थे। तब मुझे अपने पापी होने का दृढ निश्चय तुरंत हो गया था परन्तु मैं जितनी बार चर्च गया उस भावना से लड़ता रहा। थोड़े दिनों के पश्चात् वह भावना भी समाप्त हो गई और मेरे भीतर चर्च जाने की इच्छा भी नहीं रही। मेरी माँ ने चर्च जाने के लिये मुझ पर अक्षरशः दबाव डाला इसलिये मैं जितना अधिक संभव हो सके उतना घर से दूर रहा। मैं एक लड़की के साथ वास्तव में बहुत गलत संबंधों में भी पड़ गया और बातें और बुरी होती दिखने लगी।

इसी समय मेरे परिवार को मेरे लिये बहुत बोझ रहने लगा। वह बड़े दिन का समय था जब वे मेरे उद्धार के लिये बहुत गंभीरता से प्रार्थना करने लगे। चूँकि अपने परिवार से बचने के लिये मैं देर रात घर आने लगा, कभी–कभी पापा जागते रहते थे ताकि वह मेरी आत्मिक दशा के विषय में मुझसे बात कर सकें। मैं उन्हें बताता रहा कि मैं जब तेरह वर्ष का था, मैं उद्धार पा गया था, परन्तु हम दोनों जानते थे कि यह सच नहीं था।

इस दौरान अपने पापी होने की भावना मेरे मन में प्रबल थी – उद्धार पाने की बात पूरे समय मेरे मन में बसी हुई थी परन्तु मैं उसका विरोध करता रहा। अंततः फरवरी की समाप्ति में मैं और अधिक विरोध नहीं कर सका – मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि मेरा उद्धार करे। तब मैंने यह पाया कि इस दौरान अनेक लोग मेरे लिये प्रार्थना कर रहे थे। मात्र मेरे घराने के सदस्य ही नहीं परन्तु मेरी कलीसिया के लोग भी प्रार्थना कर रहे थे। मेरे छोटे भाई जॉश की युवक मण्डली भी मेरे लिये प्रार्थना कर रही थी। मुझे बहुत खुश हूँ कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया!!"

रेचल बेरनटाईन निराश अवस्था में थी जब उसने मुझसे अपने पति के उद्धार के लिये प्रार्थना करने कहा। उसके पति का शराब पीना, जुआ खेलना और पूरी रात बाहर रहना उसे पूरी रीति से पराजित कर चुका था – ऐसा लगता था मानो उसकी प्रार्थनायें व्यर्थ चली गईं। तथापि, शैतान चाहता है कि हम इसी प्रकार अनुभव करें ताकि हम प्रार्थना करना त्याग दें। तौभी परमेश्वर के समस्त रोचक कार्यों में से एक यह हैं कि किसी व्यक्ति को **अचानक अपने पापी होने की भावना से चूर-चूर** कर दे जबकि उस व्यक्ति के जीवन में उसके पूर्व परमेश्वर के प्रभाव का कोई भी चिन्ह न दिखा हो। जिम्बो बेरनटाईन के साथ इसी प्रकार हुआ: "यद्यपि मैं वेस्टवुड बैपटिस्ट कलीसिया में बढ़ा, मैं स्वयं से इतना भरा हुआ था कि मेरे जीवन में परमेश्वर के लिये कोई स्थान नहीं था। ऐसा लगता था मानो परेशानियाँ मेरे पीछे पड़ गई थीं। विवाह और मेरे बेटे के जन्म के पश्चात् मैंने अपने आप को वापस कलीसिया में पाया परन्तु मेरे जीवन में अशांति थी। मैं स्वयं में इतना खोया हुआ था कि तलाक अवश्यंभावी था, और मेरे परिवार को खो देने के बाद मेरा जीवन इस धरती पर नरक ही था।

मैंने सोचा रेचल से विवाह के बाद जीवन बेहतर होगा परन्तु मैं गलत था – वह किसी भी रीति से अच्छा नहीं था। और मामला अधिक बिगड़ गया जब उसने उद्धार पा लिया! तब मेरी बुरी आदतें और भी बढ़ गईं क्योंकि मैं शराब पीते और जुआ खेलते पूरी रात बाहर रहने लगा ताकि मैं उसकी उपस्थिति में न रहूँ जो मुझे अपने पापी होने का निश्चय दिलाती थी।

मंगलवार, 13 मार्च 2001 की पूरी रात शराब पीते और जुआ खेलते मैं घर से बाहर रहा। जब उस बुधवार की सुबह मैं घर पहुँचा, मैं जानता था कि मुझे हर हाल में अपने जीवन में परमेश्वर चाहिये, मैं इस प्रकार और आगे बिलकुल भी नहीं जी सकता था। मैं उद्धार पाने के विषय में बात करने ब्रदर ली के पास चर्च गया परन्तु वे शहर से बाहर गये हुये थे। इसलिये मैं अपने मौसा बॉब के घर, यह जानते हुये कि वह मेरी सहायता कर सकते हैं, गया क्योंकि वह एक प्रचारक हैं और मैं जानता हूँ कि वह और मौसी फेई वर्षों से मेरे लिये प्रार्थना कर रहे थे।

फेई मौसी ने मुझसे यहाँ तक कह दिया कि यदि मैं उनका पति होता तो वह बहुत पहले ही मुझे छोड़ चुकी होती। मैं इतना प्रसन्न हूँ कि रेचल ने मुझे नहीं छोड़ा क्योंकि उस बुधवार की सुबह मैंने अपने उद्धार के लिये मसीह पर पूरी गंभीरता से विश्वास किया, और उसने मेरे जीवन को अद्भुत रीति से बदल दिया है।"

आँसुओं को **"तरल प्रार्थनायें"** कहा गया है। संभवतः वे सबसे सामर्थी प्रार्थनायें हैं! आँसू कितने शक्तिशाली हैं इसका पता मुझे तब चला जब मैं मॉस ब्लफ लुईसियाना में एक प्रिय महिला की अंत्येष्टि–क्रिया कर रहा था। वर्षों पूर्व मैं टैक्सस के ऑरेन्ज में उसका पास्टर था। उस अंत्येष्टि में एक पुरुष मेरे पास आया, हाथ मिलाने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाते हुये उसने कहा, "क्या आप मुझे जानते हैं?" मैंने कहा, "नहीं महोदय, मैं नहीं सोचता कि मैं आपको जानता हूँ।" उसने कहा, ''मैं टेक्सस के बूना में रहता हूँ और मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि इस अंत्येष्टि को कोई ली थामस संपन्न करेंगे। मैं देखने आया कि क्या आप वही ली थामस हैं जिन्हें मैं स्मरण करता हूँ।" उसने मुझे यह कहानी बताई: "मेरा नाम जेम्स लिन्च है। मेरा पालन–पोषण एक मसीही घर में हुआ परन्तु जब मैं टेक्सस के ऑरेन्ज में रहता था तब मैं पुराना शराबी था कि किसी भी नौकरी में नहीं टिकता था। एक दिन मैं बहुत अधिक पीने से पीड़ित और जीवन में भ्रमित अपनी बैठक में बैठा हुआ था, आपने मेरा द्वार खटखटाया।

मैंने आपको भीतर आमन्त्रित किया और जैसे ही आपने मेरे घर में प्रवेश किया मैंने आपकी आँखों में आँसुओं का सैलाब उमड़ता देखा। आपने मुझे बताया कि यीशु मुझसे प्रेम करता है और मुझे बचाना चाहता है। परन्तु मेरे ऊपर शराब का ऐसा नियन्त्रण था कि मैंने परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

आपने मेरी कुर्सी के पास घुटने टेक दिये और आपके चेहरे पर बह रही आँसुओं की धारा के साथ आप मुझसे विनती करते रहें कि मैं अपने उद्धार के लिये मसीह पर विश्वास करूँ। उस बात ने मेरा हृदय छू लिया और मैं वैसा करना तो चाहता था परन्तु नहीं कर सका – शराब मुझ पर नियन्त्रण करती थी।

तीन वर्षों तक उन आँसुओं ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। कोई दिन ऐसा नहीं बीता जब मैंने आपको आपके घुटनों पर अपनी आँखों में आँसू लिये मुझसे पश्चाताप करने और मसीह पर विश्वास करने की विनती करते न देखा हो। तीन वर्ष परमेश्वर का प्रतिरोध करने के बाद मैं ने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने महिमामय रीति से मेरा उद्धार किया और मुझे प्रचार करने के लिये बुलाया। मैं अनेक वर्षों से उसके वचन का प्रचार कर रहा हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि यदि उस दिन आप मेरे घर नहीं आये होते तो मैं परमेश्वर के बिना खो गया होता और मर कर नरक में होता।"

जॉर्ज मुलर को अपने मित्र को मसीह के पास लाने के लिये साठ से अधिक वर्षों तक प्रतिदिन प्रार्थना करनी पड़ी। जेम्स लिन्च को मसीह के पास लाने में आँसुओं को तीन वर्ष लगे। किन्तु याबेश केरी उसी घड़ी मसीह के पास आ गया जब दो हजार मसीहियों ने उसके लिये प्रार्थना की और सिद्ध हो गया कि खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने का सर्वाधिक प्रभावी उपाय एकता से प्रार्थना करना है!

माईक डोल्स के उद्धार की कुंजी यही थी। यहाँ उसकी कहानी दी जा रही है: "मैं न्यू होप बेपटिस्ट चर्च में बढ़ा परन्तु मैंने उद्धार के लिये कभी प्रभु पर विश्वास नहीं किया। किशोरावस्था में मैंने अपने सहपाठियों को कलीसिया में जुड़ते देखा परन्तु मैंने वैसा नहीं किया। मैंने अपने भाइयों और बहनों को कलीसिया से जुड़ते देखा परन्तु मैंने वैसा नहीं किया। मैं अनन्त जीवन के सिद्धान्त पर विश्वास करता था और मैं जानता था कि मसीह पर विश्वास करना ठीक काम था परन्तु मैंने वैसा नहीं किया।

यद्यपि मेरी माँ मेरे लिये नियमित प्रार्थना कर रही थी तौभी उस रात तक कुछ भी नहीं हुआ जब तक कि पास्टर ने कलीसिया से परची पर उस व्यक्ति का नाम लिखने नहीं कहा जिसके उद्धार के लिये वे प्रार्थना करना चाहेंगे। उन्होंने मुझे बाद में बताया कि उन्होंने अठारह परचियाँ एकत्र कीं और मेरा नाम उन में से हर एक पर था। उनके द्वारा मेरे लिये प्रार्थना आरंभ करने के कुछ देर बाद ही मैं अपने भीतर खाली और खोखला अनुभव करने लगा और यह भावना बढ़ती ही गई जब तक कि मैंने बाइबिल पढ़ना और प्रभु से प्रार्थना करना आरंभ नहीं कर दिया कि वह मुझे दिखाये कि मुझे क्या करना है।

मैं पहले से ही रविवार की सुबह चर्च जाया करता था। और 1 मार्च 1998 के दिन, इन अठारह व्यक्तियों के द्वारा मेरे लिये प्रार्थना करने के दो सप्ताह बाद, प्रभु ने मुझसे कहा कि मैं वेदी की ओर पहला कदम लूँ और बाकी वह पूरा करेगा। वह प्रभु के साथ मेरे जीवन का आरंभ था। यद्यपि प्रभु का प्रतिरोध करते हुये मैंने अपने जीवन के पहले उनचास वर्ष व्यर्थ गँवायें, अब मैं जानता हूँ कि मसीही होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि अपने सभी संसाधनों का उपयोग उसके वचन को फैलाने में करें। और जो-जो अवसर वह मुझे देता है उस प्रत्येक से मैं यही करने की इच्छा रखता हूँ!"

अध्याय ७

प्रतिज्ञा करना

यह पुस्तक कहीं किसी ताक पर रखी रहने के लिये नहीं परन्तु आपके हृदय को इस विस्मयकारी, चुभने वाले सत्य से भेदने के लिये लिखी गई है: किसी की अनन्तकालीन नियति आपके हाथों में है - यदि आप प्रार्थना नहीं करेंगे तो कोई मर जायेगा और नरक में चला जायेगा!! एन्ड्रू मुरे दावा करते हैं कि मध्यस्थता (निवेदन) अनिवार्य है और आत्माओं के परिवर्तन में प्रमुख तत्व भी है: "नाश होने वाले लाखों-करोड़ों का एक संसार है और मध्यस्थता उनकी **एक मात्र** आशा है। तुलनात्मक रूप से बहुत-सा प्रेम और कार्य व्यर्थ है क्योंकि मध्यस्थता बहुत कम है . . . अनेक आत्मा, प्रत्येक आत्मा का मूल्य अनेक संसार से बढ़कर हैं और महत्व मसीह के लहू में उनके लिये चुकाये गये मूल्य से कम नहीं है, और उस सामर्थ्य की पहुँच में है जिससे उन्हें मध्यस्थता से जीता जा सकता है" (मुरे 112)।

मेरी प्रार्थना है कि यह पुस्तक आपकी हमेशा की साथी होगी जबकि आप इसके सत्य को आत्मसात करेंगे, कि आप खोई हुई आत्माओं के लिये ऐसे प्रभावशाली मध्यस्थ बनते जायेंगे जैसे बनने की परमेश्वर आपसे अत्यधिक आशा और अपेक्षा रखता है। आप जब सैन्ड्रा गुडविन की इस कविता को पढ़ते हैं, मैं आशा करता हूँ कि आपका हृदय यह कहने के लिये प्रेरित होगा, "हाँ प्रभु, इस सेवा की मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।"

यात्रा अपने घुटनों पर

कल रात मैं निकला यात्रा पर,
सात समुद्र पार एक भूमि पर।
न हुआ सवार मैं विमान या जहाज पर
पर की मैंने यात्रा अपने घुटनों पर॥

देखे मैंने वहाँ मनुष्य हजारों हजार
बन्दी अपने पापों के बन्धनों में,
और कहा यीशु ने मुझे वहाँ जाने
कि लग जाऊँ उन आत्माओं को जीतने में॥
पर मैंने कहा, "यीशु, मैं नहीं जा सकता
वे देश तो हैं सात समुद्र पार!"
उसने तुरन्त कहा, "निश्चय ही जा सकता है तू,
करके यह यात्रा अपने घुटनों पर" ॥

उसने कहा, "आवश्यकता पूरी करूँगा मैं,
तू पुकार प्रार्थना में, तेरी सुनूँगा मैं।
क्या होगा तू चिन्ता से भरपूर,
उन आत्माओं के लिये जो हैं पास और दूर?"

तुरन्त की मैंने प्रार्थना घुटनें टेक कर,
कुछ-एक घंटे अपने आराम के तजकर।
और तारणहार के मेरे साथ-साथ रहते,
की मैंने वह यात्रा अपने घुटनों पर॥

जब की मैंने प्रार्थना तो देखा आत्माओं को बचते,
और टेढ़े-मेढ़े, विकृत बीमारों को चंगे होते।
देखा कि प्रभु के सेवकों का दुगुना हुआ बल,
जब वे परिश्रम से खेतों में काटते फसल॥

कहा मैंने, "हाँ प्रभु, इस सेवा की मैं प्रतिज्ञा करता हूँ,
होवे तेरा हृदय प्रसन्न यही मैं चाहता हूँ।
सुनूँगा तेरी बुलाहट, रहूँगा जाने को तत्पर,
करते हुये यात्रा अपने घुटनों पर॥

(लुन्डस्ट्राम 207-08)

मेरा ईश्वर-प्रदत्त बोझ है कि परमेश्वर के हजारों लोगों को प्रार्थना-योद्धा बनकर आत्माओं के लिये मध्यस्थता करते हुये देखूँ। और मैं आश्चर्यजनक रीति से आशीषित हो जाऊँगा यदि आप मुझे यह बतायेंगे कि आप खोये हुओं के लिये प्रार्थना करने की इस सर्वाधिक गौरवशाली, सामर्थी और प्रभावी प्रार्थना में मेरे साथ जुड़ रहे हैं।

इसके साथ ही, यदि **एक** भी ऐसी व्यक्ति-विशेष है जिसे उद्धार पाया हुआ देखने के लिये आप **बैचेन** हैं तो मुझे उसका नाम और आपके साथ उसका संबंध लिखकर भेजिये - और कोई विशेष सूचना, जो मुझे उसकी परिस्थिति को समझने में सहायक होगी - और प्रभु की मत्ती 18:19 की प्रतिज्ञा के अनुसार मैं उसके मन-परिवर्तन के लिये प्रार्थना करने में सहमत होऊँगा। परन्तु मैं आपसे कहता हूँ कि ऐसा आप **मात्र** तब ही कीजिये **यदि** आप इस पुस्तक में मेरे द्वारा सिखाये गये सिद्धान्तों के अनुसार प्रार्थना करने के लिये पर्याप्त गंभीर हैं। मैं यह भी चाहूँगा कि आप उस व्यक्ति की परिस्थिति में परमेश्वर जो कार्य करेगा उनके विषय में, विशेषकर जब उद्धार होगा तब, मुझे बतायें!

Lee E. Thomas
2314 Foster Lane
Westlake, LA 70669

E-Mail: UserLEE484@aol.com
Phone: 337-433-8677 Office
337-433-2663 Home

मेरी प्रार्थना सूची

(1 शमूएल 12:23), "फिर यह मुझ से दूर हो कि मैं **तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर** यहोवा के विरुद्ध **पापी** ठहरूँ।"

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....
8. ....
9. ....
10. ....
11. ....
12. ....
13. ....
14. ....
15. ....
16. ....
17. ....
18. ....
19. ....
20. ....
21. ....
22. ....
23. ....
24. ....

संदर्भिका

बेलहेमर, पौल ई. – डेस्टीन्ड् टू ओवरकम – मिनियापोलीस: बेथनी हाऊस, 1982
ब्लैन्कार्ड, चार्ल्स – गेटींग थिंग्स् फ्राम गॉड – शिकागो: मूड़ी, 1934
कैरी, ई. जी. – प्रेइंग हाईड – साउथ प्लेनस्फिल्ड: ब्रिज़, एन.डी.
चाडविक, सैमुएल – द वे टू पन्टेकास्ट – फोर्ट वाशिंगटन: सि एल सि, 2001
शेफर, लुईस एस. – टू इवेन्जेलिज्म् – फिन्ड्ले: डरहाम, 1919
चेम्बर्स, ओसवाल्ड – इफ यी शाल आस्क – लैम्पलाइटर, एन. डी.
क्रिस्टेनसन्, इवलीन – बॅटलिंग द प्रिंस ऑफ डार्कनेस – व्हिटन: विक्टर, 1990
सिम्बाला, जिम – फ्रेश विंड, फ्रेश फायर – ग्रैन्ड रेपिड: झोन्डरवेन, 1997
डूवेल, वेसली – माइटी प्रिवेलिंग प्रेयर – ग्रैन्ड रेपिड: एस्बरी, 1990
डन, रोनाल्ड – डोन्ट जस्ट स्टैन्ड देअर, प्रे समथिंग – नाशविले: नेलसन, 1992
इस्टमैन, डीक – नो इझी रोड – ग्रैन्ड रेपिड्स: बेकर, 1971
एडवर्ड, ब्रायन – रिवायवल – डरहेम: इवेन्जेलिकल, 1990
एप्प, थियोडोर एच. – प्रेइंग विथ अथोरिटी – लिंकन: बाइबल ब्रॉडकास्ट, 1965
फिन्नी, चार्ल्स जी. – रिवायवल्स् आफ रिलिजन – ओल्ड टप्पन: रेवेल, एन. डी.
– चार्ल्स जी. फिन्नी : एन आटोबायग्राफी – वेस्टवूड: रेवेल, 1876
गॉर्डन्, ए. जे. – द होली स्पिरीट इन मिशन्स् – न्यू योर्क: रेवेल, 1893
गॉर्डन, एस. डी. – क्वायट टाक्स् ऑन प्रेयर – न्यू योर्क: रेवेल, 1903
हयूगल, एफ. जे. – प्रेयर्स डीपर सिक्रेट्स – ग्रैन्ड रेपिड्स: झोन्डरवैन, 1959
लुन्डस्टॉर्म, लोवेल – हाउ यू कॅन प्रे विथ पॉवर एण्ड गेट रिझल्ट्स – सिस्सेटन: लुन्डस्टॉर्म मिनिस्ट्रीज, 1981
मैथ्यूस, आर. आर्थर – बॉर्न फोर बैटल – व्हिटन: शॉ, 1978
मैक्लैरे, जेम्स जी. के.– इन्टरसेसरी प्रेयर – शिकागो: मूडी, 1909
मुरे, एन्ड्रू – द मिनिस्ट्री ऑफ इन्टरसेशन – ओल्ड टप्पन: रेवेल, एन. डी.
नेविल फिलिप – रिवायवल ऑन गॉडस् टर्मस् – शिकागो: मूडी, 1959
पेन-लुईस, जेस्सी – प्रेयर एण्ड इवेन्जेलिझम् – डोरसेट: ओवरकमर, एन. डी.
पीयरसन, ए. टी. – जॉर्ज मूलर ऑफ ब्रिस्टल – ओल्ड टप्पन: रेवेल, 1899
रेवेनहिल, लेनार्ड – रिवायवल गॉडस् वे – मिनियापोलिस: बेथनी हाऊस, 1986
स्मिथ, एडी – इन्टरसेर्सस – हाऊस्टन: स्पिरीटूथ, 1998
स्पर्जन, चार्ल्स – माय कानवर्जन – स्प्रिंगडेल: व्हाइटेकर: 1996
– ट्वेल सरमन्स् ऑन प्रेयर – ग्रैन्ड रेपिडस्: बेकर, 1990
स्टीअर, रोजर – जॉर्ज मूलर:डिलायटेड इन गॉड – व्हिटन: शॉ, 1981

यीशु ने वही किया जो उसने अपने पिता को करते हुये देखा (यूहन्ना 5:19)। इसी प्रकार, हमें भी वही करना चाहिये जो हम अपने प्रभु को करते हुये देखते हैं, और वह क्या कर रहा है – "वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रानियों 7:25)। हम कुछ मसीहियों को मध्यस्थ का नाम देकर बहुत बड़ी

गलती करते हैं। यह ऐसी घोषणा करने का प्रयास है कि मानो हम जो बाकी लोग हैं इस जिम्मेवारी से बच गये हैं – ऐसा नहीं है!!! हम सब को वही करना है जो हम अपने प्रभु को करते देखते हैं – दूसरों के लिये प्रार्थना करना।

इसलिये, आइये हम **खोये हुओं के लिये प्रभावी रीति से प्रार्थना करना** सीखें और यह प्रमुख कार्य करने में अपने प्रभु के साथ जुड़ जायें।

All India Decade of Advance

NOT FOR SALE
For Private Circulation Only